पाक्षिक

सारिका

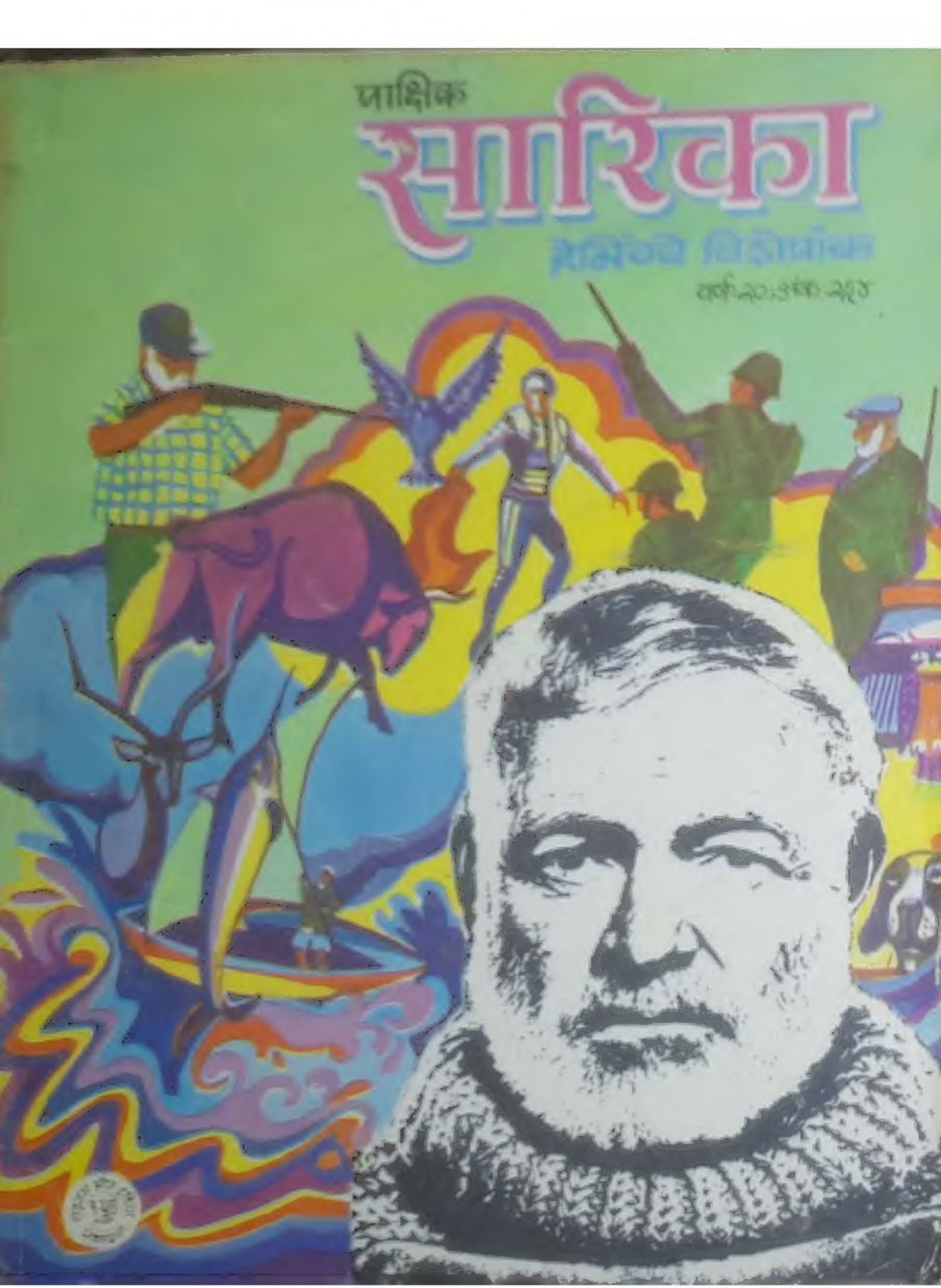

देखिए...
सर्वोत्तम सफ़ेदी के लिए रानीपाल®

कहें कि आपने भी संसार में पहले साबुन से धोइए या रानीपाल मिलाइए और फिर देखिए... कहीं पर कमती सफ़ेदी! रानीपाल की सफ़ेदी! सफ़ेद कपड़े के दो रूप—ब्लू, सिल्वर्स और ब्लीचर— दोनों से चमक उठते हैं.

विशेष रानीपाल लगाइए... और सफ़ेदी देखिए, दिखाइए!

ब्लू कपड़े के लिए रानीपाल®
सिल्वर्स और ब्लीचर कपड़े के लिए रानीपाल®-एस

धूम मचा दे... रंग जमा दे.

हर मौके पर, हर महफ़िल में, लाजवाब-पान पराग इलायची खुशबू, अहाहा! गुलाब और केवड़े का महकता हुआ संगम। इसका स्वाद—भई वाह! सुपारी, कत्था, चूना, इलायची फ्लेवरिंग्ज़, सबकी लज़्ज़त एक साथ! खा कर ऐसी मस्ती आये, कि बस, दिल बाग-बाग हो जाये। हम तो इसी के आशिक हैं!

—जलाल आगा.

पान पराग®
पान मसाला
दुनियाँ में सबसे ज़्यादा बिकनेवाला

कोठारी केमिकल्स, बिरहाना रोड, कानपुर

ज़्यादा किफ़ायत और सफ़ेदी चाहिए
तो साबुनों को भूल जाइए, लाइए

सुपर ७७७ डिटर्जेण्ट बार

- साबुन से १½ गुना ज़्यादा शक्तिशाली, ज़्यादा किफ़ायती !
- ऑप्टिकल व्हाइटनर युक्त!!

दुनिया की नं.१
डिटर्जेण्ट
धुलाई की बार
सुपर ७७७

मैल की शामत,
सफ़ेदी की
ताक़त

बचत करना इतना आसान है मैं नहीं जानती थी...

जब तक मैंने पी एन बी में
आवर्ती जमा खाता नहीं खोला—

बचत करना तो बहुत लोग चाहते हैं लेकिन उनकी व्यवस्था नहीं कर पाते।

बिना किसी कठिनाई के बचत! पी एन बी की आवर्ती जमा योजना इसके लिए सबसे आसान रास्ता है। आप 5 रुपये या इसके गुणितों की छोटी सी मासिक किस्त से अपना खाता खोल सकते हैं। यदि आप 63 महीनों के लिए 50 रुपये हर माह जमा करते हैं तो अवधि पूरी होने पर आपको 4,145.50 रुपये प्राप्त होंगे।

पंजाब नैशनल बैंक

जलन से सताती, खुजलाती घमौरियों की बेचैनी भूल जाइये।

सारिका

कहानियों और कथा-जगत की जीवंत पाक्षिकी

वर्ष : 20; अंक : 264; 1 से 15 जुलाई, 1980

संपादक
कन्हैयालाल नंदन
मुख्य उप-संपादक :
अवधनारायण मुद्गल
उप-संपादक :
रमेश बत्तरा, सुरेश उनियाल
बलराम, अरुण वर्द्धन
विशेष रूप से इस अंक की प्रस्तुति एवं सज्जा-परिकल्पना :
रमेश दत्तात्रेय रो
कला निदेशक, टाइम्स ऑफ इंडिया, बंबई

साक्षात्कार

11. जीवन में एकमात्र जिसका आगे आदमी हेमिंग्वे से आज्रे लिण्डस्टम की बातचीत.
16. जिलाये जाते या नहीं कर सकती : मेरी बेन्डा से बातचीत।

विविध-प्रसंग

19. तब मुनि से साक्षात्कार करने हुए : आरी संयम
23. उसने जिसके के प्रेम में दुनियां छोड़ी थी : हरिमोहन शर्मा
26. जिन्दगी की छह बातचीत और हेमिंग्वे के छह सवाल : लेटरर
28. खोजना पाया और पाया के हजारों : कोचे
36. दीपो के घरों का मौन (भारतीय अंग्रेजी कहानी) : राजन भेड
66. हेमिंग्वे की मांहलाए :

हेमिंग्वे विशेषांक

हेमिंग्वे की रचनाएं

31. हथियारों को विदाई (उपन्यास का कथासार)
40. हथियारों को विदाई (उपन्यास का कथासार)
47. सिपाही (कहानी)
50. बच्चे और बूढ़ा आदमी (उपन्यास के अंश)
52. नदी दुपहरी मौत (कहानी)
58. पुल पर बूढ़ा आदमी (कहानी)
59. एक मुख्तसर-सी कहानी (कहानी)
60. किसके लिए ? (उपन्यास का कथासार)
64. युद्ध के मैदान में (रिपोर्ताज कथा)

अन्य आकर्षण

8 पाठकों का पन्ना
9 हेमिंग्वे : संघर्ष की शुरुआत
12 अनेस्ट हमेशा अनेस्ट नहीं रहता था
13 हेमिंग्वे : लिखने की मेज और बेतरतीबी का सुपरवाइजर
17 दुलारा था मेरा पति
18 जिस दिन हेमिंग्वे को नोबेल पुरस्कार मिला
20 आइडिया कहां से आते हैं?
25 वह एक सिम्बोल
27 जब हेमिंग्वे का कोई मार्जिन होते-होते बचा
30 भगवान और आत्मोद्धार
42 रचना एक शोषक छंतीस
55 आत्मकथा लिखने का विचार मन में कभी नहीं आया

पाठकों की कलम से

साढ़े पतनाला

राकेश वत्स के लेख पर बहस चलाने के लिए बधाई. इससे पहले कि कुछ कहा जाये, बहस पर ही कहना है—'सारिका' यहां बहस को प्रोत्साहन देकर रचनाओं की बारीकियों का अध्ययन करती, करवाती है, वहां इसे अचानक समाप्त करके एक निराशा को भी जन्म देती है. निर्णय यह कि आदेश, निर्देश होते रहेंगे, लेकिन होगा कुछ नहीं, यानी 'तुहाड़ा कहणा सिर मत्थे, साढ़ा पतनाला सत्थे दा उत्थे.'

राकेशजी के कथन पर तो यही कहना है कि आज का लेखक, संपादक, प्रकाशक सभी व्यावसायिक हो गया है. और मजा यह कि पाठक भी अब 'समयकाटू' बन गया है. मार्गदर्शन या समाज के उत्थान के बारे में सोचना एक संयोग ही हो सकता है. बड़ी पत्रिकाएं एवं पुस्तकें गांवों में मात्र .05% ही जाती हैं और भारत के 80% लोग गांव में रहते हैं.

▣ बद्रीसिंह माटिया, शिमला

खूबसूरत जिल्दों का साहित्य

सार्थक साहित्य को पाठकों से जोड़ने की बहस की शुरुआत अपने आपमें कम सार्थक नहीं है. साहित्य की सार्थकता उसके आम आदमी के साथ जुड़ने में है. आम पाठक से कटा हुआ साहित्य अधिक दिनों तक जिंदा नहीं रह सकता. खूबसूरत जिल्दों में बंधा ऐसा साहित्य मात्र पुस्तकालय की आलमारियों की शोभा बना रह जाता है. तुलसी, सूर, कबीर और प्रेमचंद के साहित्य की जीवंतता आम आदमी की जिंदगी में घुल-मिल जाने की वजह से ही कायम है.

सार्थक साहित्य अवाम से जुड़े, इसके लिए यह आवश्यक है कि वह आम आदमी की जुबान में लिखा जाये. सवाल पाठकों की कमी का नहीं है. मुख्य मुद्दा यह है कि सार्थक साहित्य कुछ मुट्ठीभर लोगों के लिए ही न लिखा जाये. साहित्य आम आदमी को जुबान की अवहेलना कर लिखे जाने की हालत में साधारणजन के लिए अरुचिकर हो जाता है और विराग लेकर ऐसे सार्थक साहित्य के लिए पाठक दूसरे की मजबूरी पैदा होती है.

▣ बी. राम, किशनपेट, पूर्णिया

फिल्मी साहित्य का मुकाबला

वत्स ने साहित्य की सार्थकता को पाठकों के साथ जोड़कर देखने का जो सुझाव दिया है, वह उचित तो है, परंतु उससे साहित्य के स्तर के नीचे गिर जाने का खतरा पैदा हो जाता है. उच्च स्तर का साहित्य कभी भी पाठकों की संख्या के आधार पर नहीं मापा गया, क्योंकि ऊंचे दर्जे के पाठक हमेशा ही बहुत कम होते हैं. जिस प्रकार ऊंचे स्तर का साहित्य लिखने की प्रतिभा ईश्वर की देन होती है, उसी प्रकार ऊंचे स्तर का साहित्य पढ़ने और समझने की प्रतिभा भी ईश्वर की ही देन होती है. आज तक दुनिया का कोई भी साहित्य पाठकों की संख्या की दृष्टि से सस्ते किस्म के फिल्मी साहित्य का मुकाबला नहीं कर सका. हां, धार्मिक साहित्य उससे टक्कर जरूर लेता रहा है. वत्सजी क्या ऊंचे स्तर के साहित्य को उस दर्जे तक नीचे लाना चाहते हैं?

▣ उषा देवी, चंडीगढ़

संग्रह के लिए न लिखें!

सारिका ने बहस की मांग करके सचमुच एक सराहनीय काम किया है. हमारे साहित्यकारों के सामने यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि उसका आम आदमी उससे दूर क्यों है? मैं वत्स से सहमत हूं कि "साहित्य केवल कलम और जुबान से नहीं, बल्कि आचरण और व्यवहार से रचा जाता है."

विचारों का सरलीकरण सामान्य पाठक को ध्यान में रखकर करना बेहद जरूरी है. अन्यथा रचना संग्रह के लिए हो जायेगी. अतः मेरा तमाम साहित्यकारों से अनुरोध है कि वे संग्रह के लिए न लिखें.

▣ अशोक कुमार तिवारी, वाराणसी.

श्रद्धांजलि

पिछली 19 मई को डा. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' तथा 2 जून को विश्वंभर 'मानव' इलाहाबाद के साहित्य प्रांगण से हमेशा हमेशा के लिए उठ गये. 1899 में मऊ (बांदा) में जन्मे डा. रसाल 1950 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रीडर तथा बाद में गोरखपुर, जोधपुर और सागर विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागाध्यक्ष रहकर ब्रज भाषा काव्य को समृद्ध करते रहे—उद्धवशतक, काव्यपुरुष, रघुचरित्र तथा अलंकार पीयूष उनकी प्रमुख कृतियां हैं. साहित्य वाचस्पति की उपाधि से विभूषित डा. रसाल को उ.प्र. हिंदी संस्थान ने 15 हजार रुपये का पुरस्कार दिया था.

2 नवंबर 1912 में डिबाई (बुलंदशहर) में जन्मे विश्वंभर 'मानव' का साहित्यिक जीवन इलाहाबाद में शुरू हुआ. आकाशवाणी और सम्मेलन पत्रिका के संपादक रहे. पीले गुलाब की आत्मा, प्रेमिका और नदी (उपन्यास) अवसाद (कविता संग्रह) लहर और चट्टान (रेडियो रूपक) प्रेमचंद, नयी कविता और काव्यदेवता (समीक्षा) उनकी प्रमुख कृतियां हैं. विश्वंभर 'मानव' के निधन से हमने एक आलोचक, कवि तथा उपन्यासकार खो दिया है. इन दोनों साहित्यिक विभूतियों को 'सारिका परिवार' की हार्दिक श्रद्धांजलि.

● राम शंकर शुक्ल 'रसाल'

● विश्वंभर 'मानव'

यह अंक

'सारिका' ने कथा-जगत से संबद्ध देशी-विदेशी व्यक्तित्वों पर विशेषांकों की परंपरा शुरू की. इस परंपरा को सुधी पाठकों ने मुक्तकंठ से सराहा, और उन्हें दस्तावेज के रूप में सहेजकर रखा. इस परंपरा की शुरुआत मोहन राकेश विशेषांक से हुई थी. राकेश के बाद कुलवंत-कुमार, यशपाल, रेणु, मंटो, ताल्स्तोय, सेक्सपियर, सार्त्र और कामू का विशेषांक आ चुके हैं. अब प्रस्तुत है यह हेमिंग्वे विशेषांक.

हेमिंग्वे विशेषांक की योजना हमने पिछले वर्ष बनायी थी, घोषणा भी कर दी थी, लेकिन हड़ताल आदि के कारण यह योजना टल गयी और फिर टलती ही गयी. लेकिन सारिका अपने पाठकों के सामने वचनबद्ध थी, इसलिए विशेषांक तो निकलना ही था, समस्या सही समय की थी. हेमिंग्वे के लिए जुलाई से अच्छा महीना और कौन-सा हो सकता था, क्योंकि वह जुलाई (21) में पैदा हुए और जुलाई (2) में ही उन्होंने एक रिवॉल्वर के धमाके के साथ दुनिया से 'गुड बाय' किया.

हेमिंग्वे दुनिया के बेहतरीन कथाकारों में तो हैं ही, लेकिन अमरीकी कथाकारों में वे हमारे और तीसरी दुनिया की मान-सिकता के ज्यादा नजदीक ठहरते हैं. कमजोर वर्ग चाहे किसी भी देश और काल का हो, लेकिन उसकी जीवन-स्थितियां, उसकी त्रासदियां, उसकी सोच, उसकी तकलीफ, उसकी जुझारू और जिजीविषा एक जैसी और साझी की है. इस जुझारू और जिजीविषा को जो भी लेखक पूरी ईमानदारी, सहजता और जीवंतता के साथ अभिव्यक्ति देता है, वह निश्चय ही महान होता है. हेमिंग्वे इसी अभिव्यक्ति के कारण एक महान लेखक है—हमारे अपने लेखक हैं. हेमिंग्वे को पढ़ते समय हमें कतई नहीं लगता कि हम किसी अनजानी विदेशी जिंदगी को पढ़ रहे हैं. हेमिंग्वे का 'बूढ़ा आदमी' हमारे ही मछेरों की बस्ती से निकलकर खड़ा हो जाता है. हेमिंग्वे की इस सार्वभौम आत्मीयता के कारण ही हम यह विशेषांक प्रस्तुत करने को बाध्य हुए हैं.

—सम्पादक

हेमिंग्वे : संघर्ष की शुरुआत

सन् 1921 में हेमिंग्वे ने शादी की और सपत्नीक पेरिस आ गये. 1926 तक वे वहीं रहे. इस समय के दिन थे और प्यार के. प्रेमपूर्ण सहयोग के क्षण में उन्होंने कई विषयों पर काफी कहानियां लिखीं. पर उनके जेहन में लगातार तैयारी चलती थी उन उपन्यासों की, जो अभी लिखे जाने थे. अब तक जिस तरह उन्होंने लिखा था, उस ढांचे को हेमिंग्वे ने तोड़ दिया था और सही माने में एक गुणात्मक रचना देना चाहते थे. कभी-कभी तो पूरा एक पैराग्राफ लिखने में ही सप्ताह गुजर जाता हो जाती. उपन्यास जैसी बड़ी चीज वे कैसे लिखेंगे, उन्हें नहीं पता था. कभी-कभी कोई नयी कहानी शुरू करते हुए हेमिंग्वे कहीं अटक जाते और घंटों आगे न बढ़ते. उस समय हेमिंग्वे अग्निदान के सामने बैठ घंटों के छिलके दबा दबा कर आग की लपट में छोड़ते और दो को तीन होते देखते रहते. कभी खड़े होकर पेरिस की छतें निहारने और सोचते, "किप्प न कभी अनेस्ट, तुमने पहले भी हमेशा लिखा है, अब भी लिखोगे. बस, तुम्हें इतना भर करना है कि एक अच्छी वाक्य जमा-कर लिख दो, फिर लिखते चले जाओगे. एक सच्चा जुमला लिखकर तो देखो."

अपने समस्त लेखन के दौरान उन्होंने यही किया. उन्होंने उन विषयों पर लिखा, जो उन्हें अच्छी तरह मालूम थे. यह एक बढ़िया, लेकिन बौद्धिक सतर्कता थी. उन्हीं दिनों उसी कमरे में उन्होंने यह भी पहचाना कि दिन के जिस विशेष पर लिखना बंद करो, अगले दिन तक कम से कम उस विषय के बारे में बिलकुल न सोचो. इस तरह अपने अवचेतन में वे एक तैयारी में जुटे रहते. साथ ही साथ दूसरे लोगों के कार्यकलाप में दिलचस्पी लेते. जिस दिन वे ठीक-ठाक लिख लेते, घर की सीढ़ियां उतरते हुए एक एहसास से भर जाते और पेरिस में भटकते फिरते.

उन दिनों हेमिंग्वे के पास किताबें खरीदने लायक पैसे नहीं थे. वे सिल्विया-बीच की लायब्रेरी व दुकान 'शेक्सपियर एंड कंपनी' से मुफ्त में उधार लाते. उस से छिहत्तर गली में यह एक वर्ग-गज जगह थी, जहां एक बड़ा सा आतिशदान था. दीवारों पर दिवंगत व समकालीन प्रसिद्ध साहित्यकारों के चित्र लगे थे. अद्भुत तपाक लिये सिल्विया का चेहरा एकदम ताजाकलीन लगता. उनके सुर्ख बाल, उनकी भूरी आंखें से रच-मिलाकर अपने लगते न केवल उसकी दाढ़ी, उसका स्वभाव भी अच्छा था—आत्मस्थ. जब वे पहली बार उस दुकान में गये तो वेप रहे थे. उनके पास लायब्रेरी का सदस्य बनने लायक पैसा नहीं था. सिल्विया ने कहा, "कोई बात नहीं, दस-बीस जब पैसा पास हो, चंदा जमा कर दें." और कार्ड बनाकर बोली, "आप जितनी भी किताबें ले सकते हैं."

▣

बसंत आगमन पर यह तय किया कि शादी बसंत के आने पर भी हेमिंग्वे दंपति के सामने सुखी रहने के अलावा कोई समस्या न थी. हर दिन अलग था, उसकी अलग-अलग तरह करते थे. जिसे हो बसंत सरोकार थे.

पतझड़ की अलसाई शाम हेमिंग्वे को पत्नी सोती ही लगी. वे उठकर लिखने लगे. बीच में उठकर रम की अलमारी खोली पाव एक बार में दोनों रम में तौल भी गये. उस दिन उनके पास किताब और बसंत का अद्भुत संयोग था. लोकल कलर पार्सोन था, बेहद पार्सोन और वे लगे थे. पूरा जोर लगा

जब यह पूरा न चला हो तो पेरिस में भूख कलकर लगती रहती, क्योंकि वहां नाश्ते-दोपहर में बेहतरीन खाने मिलते. लोग बाहर पड़ी मेजों के इर्द गिर्द खाते, खाते हो सकते में लोग और भी चमक जाते.

उन दिनों हेमिंग्वे ने पत्रकारिता से किनारा कर लिया था. □

● प्रस्तुति : ममता कालिया

हैमिंग्वे: तिथि रेखाएं

1899

[illegible] 21 जुलाई (ओक पार्क) —ग्रेस हॉलेज ई हैमिंग्वे एवं क्लेरेंस ई हैमिंग्वे पुत्र.

1917–18

[illegible] के एक छोटे स्कूल से स्नातक होने के बाद किसी कारण से अनिवार्य सैनिक सेवा के अयोग्य घोषित होने के कारण उन्हें प्रथम महायुद्ध के लिए सशस्त्र सेवा से नहीं लिया गया. वह रेडक्रास के साथ एम्बुलेंस ड्राइवर हो गए. इटली के वेनिस के एक अस्पताल में घायल किशोरों अस्पताल में लेफ्टिनेंट हेमिंग्वे मुलाकातों बाद की मार्च के हेमिंग्वे के इटली और अमरीकी सरकारों द्वारा युद्ध.

1919–20

घायल होकर लौटे. की दो अभिनेत्राओं के प्रेमपत्र लिखने लगने में छह गये. टोरोंटो स्टार में नौकरी फिर शिकागो में प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका की संपादन. हैडले रिचर्डसन से शादी.

1924

एक पुस्तक 'द टोरंटेड ऑव स्प्रिंग' प्रकाशित हुई जिसमें अपने मित्र सेरवरमन एवं अन्य साहित्यिकों के कथा-शिल्प पर व्यंग्य किया गया था. 'द सन आल्सो राइजेज' एक सफल उपन्यास साबित.

1927–28–29

[illegible] पहला कहानी संग्रह का प्रकाशन. विवाहेतर संबंध तलाक. पहली के विवाह करके अमरीका लौट आये. फ्लोरिडा में कीवेस्ट नामक जगह पर घर खरीदा. दूसरे बेटे का जन्म. अखबार विदेश संवाददाता कर लौटे. घर केंदरदल हुआ.

1932

बाल-युद्ध से संबंधित पुस्तक 'डेथ इन द आफ्टरनून' का प्रकाशन. अमरीकी राजनीति में हस्तक्षेप.

1937–38

दूसरे हाथ अखबारों भाग स्पेन की समस्याओं पर एक पुस्तक 'द हैव एंड हैव नोट' प्रकाशित की. स्पेन गये.

1939–40

अमरीका की सफलतम पत्रिकाओं की पृष्ठभूमि में लिखित महत्वपूर्ण कहानियों के संकलन में सबसे पहले गणतंत्रवाद के पक्ष में लिखा गया अपना नाटक 'द फिफ्थ कालम' प्रस्तावना. मार्था गेलहॉर्न से विवाह. फ्लोरिडा वाला मकान पालिन को देकर स्पेन में ३, बसे. 'फार हूम द बेल टोल्स' लोकप्रिय.

1944–45–46

युद्ध संवाददाता के रूप में फ्रांस जाकर

तीसरी आवृत्ति में गुजरात पेरिस पहुंचे. दो मोर्चों पर फिर भी लड़े 'कंट्रोलर' से सम्मानित. पत्रकार मेरी वेलश से पेरिस आगमन पत्रकार मेरी से भेंट और अंतिम विवाह. पूर्वी, समुद्र और हवा के तटों में एक महत्वपूर्ण पुस्तकमाला की शीघ्रपेशा.

1953–54

पुलित्जर पुरस्कार मिला. नोबेल पुरस्कार से सम्मानित. परंतु पुरस्कार प्राप्त करने के लिए स्टाकहोम जाने में असमर्थता प्रकट कर दी.

1960

मार-युद्ध पर गहन अध्ययन के तहत 'द डेंजरस समर' नामक शृंखला के कुछ भाग 'लाइफ' में छपे. साथ ही वे 'ए मूवेबल फीस्ट' शीर्षक से पेरिस के संस्मरण भी लिखते रहे. बीमार होकर मिनसोटा में इलाज.

1961

कारों पर गवर्नरों के कब्जे के बाद क्यूबा में रहना दूभर होता चला गया. उनकी बीमारी बेहतरीन इलाज के बावजूद बढ़ती ही गयी. इस मनःस्थिति में जीते हुए जीने के उत्साह समेत 2 जुलाई को केचम में आत्महत्या कर ली.

बचपन में ही हेमिंग्वे कुछ न कुछ कर गुजरने की सोचा करते थे. ओपेरा गायिका और चित्रकार मां उन्हें कलाओं की ओर मोड़ती, और पिता कहते कि जो भी करो, अच्छे पैमाने का करो.

"हत्या किसी की भी हो मनुष्य में की गयी हो तो क्या करें है. सभी को एक दिन मरना है." शिकार में यह कहने वाला अर्नेस्ट स्पेन की सड़कों पर हत्याएं देखकर तिलमिला उठता.

पापा कहने और कहलाने का उन्हें शौक था. किलीमंजारो की चोटियों को देख-देखकर पापा मस्करा कर कहते, "पहाड़ों के आगे बाकी सारी दूरियां बौनी हो जाती है."

लेखन में लेखक जितना आगे जायेगा उतना वह अकेला होता जायेगा

अर्नेस्ट हेमिंग्वे के साथ जार्ज प्लिंपटन की बातचीत

आप कब लिखते हैं? क्या आपका कोई निश्चित समय या शिड्यूल होता है?

जिन दिनों किसी किताब या कहानी पर काम कर रहा होता हूं उन दिनों मैं रोज सुबह लिखता हूं यों फर्श ज्यों जितनी जल्दी संभव हो उस समय कोई डिस्टर्ब नहीं करता वातावरण ठंडा और हल्का होता है और पूरी सुबह गर्मजोशी से काम किया जाता [illegible] बशर्ते सुबह छह बजे [illegible]

क्या आप [illegible] हुए को दोबारा भी लिखते हैं, या पुस्तक खत्म होने पर ऐसा करते हैं?

ऐसा क्या था जो आपको बराबर इतना बड़ा जोखम का काम करने के लिए प्रेरित करता रहा?

क्या कभी ऐसा भी होता है कि जब प्रेरणा (इंस्पिरेशन) ही न होती हो?

होता है! पर आगे जो लिखना है, उसके बारे में सोचने से लगता है आप आगे लिख सकते हैं

आप लिखने के लिए कौन-सी जगहें उपयुक्त मानते हैं? हवाना को? क्योंकि वहां आपने कई किताबें लिखीं. क्या परिवेश लेखन पर अपना असर देता है?

हवाना लिखने के लिए बहुत ही अच्छी जगह थी लेकिन मैंने हर जगह लिखा है मैं विपरीत परिस्थितियों में भी लिखता रहा हूं हालांकि देहिकान और आने वाले लोग समय जरूर नष्ट करते हैं

अच्छे लेखन के लिए क्या भावात्मक स्थिरता जरूरी है? आपने मुझसे कहा था कि आप उसी समय बेहतर लिख पाये, जब आप किसी के प्यार में रहे. इस पर आपका क्या कहना है?

आप किसी भी समय लिख सकते हैं बशर्ते लोग आपको परेशान न करें अकेला छोड़ दें, या आप इसकी परवाह ही न करें लेकिन उत्कृष्ट लेखन तभी होता है, जब आप प्यार में हैं ऐसा अगर आपके साथ भी है तब मैं व्याख्या नहीं करूंगा!

आर्थिक सुरक्षा के बारे में आपके क्या विचार हैं? क्या वह अच्छे लेखन के लिए हानिकारक नहीं हो सकती?

अगर काफी पहले ही आर्थिक सुरक्षा मिल जाती है और आप जिंदगी और लेखन में एक-सा प्यार करते हैं तो प्रलोभन को रोकने में खासा जोर पड़ेगा. अगर लेखन एक बार आदत बन जाये और उसी में आप सर्वोत्तम सुख अनुभव करने लगें, तो सिर्फ मृत्यु ही इसे रोक सकती है आर्थिक सुरक्षा खासी सहायक है, क्योंकि वह चिंताओं से मुक्त करती है चिंता में लिखने से समस्याएं स्पष्ट होती हैं

क्या आपको कोई ऐसा क्षण याद पड़ता है, जब आपने लेखक बनने का फैसला लिया?

मैं हमेशा लेखक बनना चाहता रहा.

होने वाले लेखकों के लिए आप कौन-सा बौद्धिक प्रशिक्षण उत्तम मानते हैं?

रचनात्मक लेखन का प्रशिक्षण उतना आसान नहीं, यह फांसी के फंदे पर झूल जाने जैसी बात है. अपने को काटते चले जाने की यातना से गुजरकर पता चलता है कि फिर जिंदगी में क्या लिखना है इस तरह कम से कम फांसी के फंदे पर लटकने की यंत्रणा तो उसके पास होगी, जिसमें वह लेखन की शुरुआत कर सकता है

उनके बारे में कुछ बताएंगे जो शैक्षिक जगत में गये? क्या आपके विचार से शिक्षा जगत में गये लेखकों ने लेखन से समझौता कर लिया?

निर्भर करता है कि आप समझौता कहते किसे हैं? क्या उस आदमी का आचरण

● एक बार विरोधियों ने हेमिंग्वे का तो नहीं, उनके एक कुत्ते को गोली मार दी और हेमिंग्वे एक शब्द विरोध में न बोल पाये. आखिरकार कत्ल कर डाले गये. चित्र में क्यूबा का उनका घर. क्यूबा में बीस साल रहने के बाद हेमिंग्वे अपने को 'सच्चा क्यूबाई' कहने लगे थे. लेकिन क्यूबा की हालत यह थी कि उन्हें कत्ल चला जाना पड़ा.

अर्नेस्ट हमेशा 'अर्नेस्ट' नहीं रहता था

मेरी हेमिंग्वे का कहना है कि उनके पति पर लिखी गयी उनकी समस्त किताबों में जो एक बात छूट गयी है वह है हेमिंग्वे का विनोदी स्वभाव उन्होंने यह भी कहा है कि हेमिंग्वे ने अपना कवियों में हास्य पर ठीक-ठाक काम नहीं किया है इस तरह यह एक बड़ा मजाक है कि अर्नेस्ट हमेशा 'अर्नेस्ट (गंभीर) नहीं रहता था.

संक्षेप में हेमिंग्वे के विनोद का एक नमूना देखिए. एजरा पाउंड की कविता 'ट्रीज' की उसने पैरोडी की है

मैं सोचता हूं
मैं किसी चीज को तरफ नहीं लपकता
जिस तरह घास फूलकर एक-दूसरे की तरफ
लपकती है
घास जिसका भूखा हृदय
रेल की पटरियों को ढंक देता है
घास जो पैरों तले उगती है
कद्दू और शलजम के पेड़ों को जन्म देती है
पेड़ ईश्वर जैसे मूर्खों द्वारा बनाये जाते हैं
घास से ऊपर उन्हें कौन उठाता है?

कहीं-कहीं हेमिंग्वे का विनोदी स्वभाव इतना ज्यादा अश्लील हो गया है, उन अंशों को ज्यों का त्यों छापा भी नहीं जा सकता □

प्रस्तुति : ज्ञानकोशप्रसाद शर्मा

हेमिंग्वे : लिखने की मेज और बेतरतीबी का सुथरापन

अर्नेस्ट हेमिंग्वे अपने बहुचर्चित में लिखते थे. उसी में उनके मेज पर एक तरफ किताबों का ढेर और दूसरी तरफ पांडुलिपि, अखबार, मेनुस्क्रिप्ट्स, पपलेट्स रखे थे लिखते वक्त वे खड़े होकर लिखते थे

आजतक हेमिंग्वे अपने लिखने के कमरे को अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त मेज इस्तेमाल नहीं करते, हालांकि इस पर लिखने को अधिक जगह रहती. सो, विचारना इस मेज पर भी रहती—चिट्ठियों के बहुत ढेर का खिलौना, मांसाहारी पक्षियों के दांतों से भरा एक डाट का बैग, दो जेबरे और एक मामूल सुअर—अंतिम दोनों सुअर एक पंक्ति में रखे होते और पुस्तकें भी' उपन्यास, कहानी, इतिहास, निबंध, नाटक, कविताएं, सभी कुछ.

हेमिंग्वे का यह कमरा जो पहली नजर में बड़ा बेतरतीब था, बताता है कि इसका मालिक सुथरा पसंद है पर चीजों को बाहर भी नहीं फेंक सकता. खासकर उन चीजों को, जिनसे वह भावात्मक रूप से जुड़ा है.

हमने वे अपनी कड़ि मान सकते थे, पर वे उनके बारे में ज्यादा बातें करना पसंद नहीं करते थे यह सोच कर कि उनका जो अर्थ और मूल्य है, वह ऐसा करने से जा सकता है. लेखन के बारे में भी उनका यही विचार था कि लेखन पूर्ण होकर सामने आने से पहले तक एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है

थे और एक पत्र-पत्रिका के लिए इस मुलाकात का आयोजन हो पा रहा था, उस समय उनके पत्रों के उत्तर में एक लम्बा विवरण और इस तरह सामग्री का संपादन में सहायक हो

क्या आप अन्य लेखकों से रचना के बारे में कुछ सीख पाये? आपने बताया कि ज्यादातर अपने लेखन के बारे में ज्यादा बात करना पसंद नहीं करते थे

[illegible] आप पाते हैं कि बाद के वर्षों में आपने लगातार में मित्रता-जलन में कुछ कमी रखी. ऐसा क्यों लगता है?

दरअसल लेखन में स्थापित जितना आगे जायेगा उतना ही वह अकेला होगा आपके अधिकांश मुकाम और

अकेला किया [illegible] कर चुके आगे बढ़ने हुए कि [illegible] आपने उनमें कभी कमी हो सिर्फ पाठक संख्या हो पाठकों जैसे पढ़ा होगा उनमें कुछ हमारे लेखकों [illegible] किसी कैफे में घुसते [illegible] पाठक वैसे हो कभी कभी [illegible] सार्वजनिक पदों का आदान-प्रदान भी हमारे और कभी पहले और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक के पदों का भी कुछ कि फिर यह उनका ही घरेलू-दायरा होता है जिसमें कि सारा प्यार [illegible] [illegible] आपको कैसे करना हो है और उसके लिए सामग्री होती है कम आप उस सामग्री का [illegible] [illegible] होता है [illegible]

आपके पुराने लेखक कौन-से हैं, जिनसे आपने कुछ सीखा

[illegible] [illegible], [illegible], [illegible],

क्या आपने कभी कोई वास्तव पत्र बजाया

आपने लेखकों के लिए एक प्रकार की चेतावनी दी थी, कि उसे 'लिखे जा रहे' लेखन के बारे में जाने नहीं करनी चाहिए. ऐसा क्यों? कई लेखक जिनमें मार्क ट्वेन, वाइल्ड थवर, स्टीफन्स याद आ रहे हैं, लिखी जा रही रचनाएं

पाठकों को पहले सुनाते थे फिर सुधारते थे

आपने एक बार मुझे बताया था कि साधारण स्थितियों जिनमें विभिन्न कथाएं लिखी गयी, अधिक उपयोगी होती है. क्या यह आपने 'द किलर्स' के संबंध में कहा था? आपने कहा था कि आपने 'टेन इंडियन' 'टू बी ऑन द साइड' एक ही दिन में लिखे. शायद आपने उपन्यास 'द मैन आल्सो राइमेस' के अंश भी साधारण स्थितियों में ही लिखे.

द मैन आलसो राइमेस' मैंने अपने जन्मदिन पर शुरू किया था मेरे सम-सामाना में सब उपन्यास लिख चुके थे उपन्यास का पहला संस्करण मेरे पास पहुंचा उसी दिन मेरे उपन्यास-कार मित्र नैथन ने टेलीफोन करके कहा 'हेनरी (हेमिंग्वे) यह कहने का क्या मतलब कि तुमने उपन्यास लिखा! उपन्यास!'' मैं नैथन के कथन पर हतोत्साहित नहीं हुआ और उपन्यास [illegible] जो कहानियां आपने गिनायीं [illegible] एक गिरोह या एक [illegible] लिखा [illegible]

दांत निकलने के दिनों में यह बच्चे की सहायता करता है...

नौनिहाल ग्राइप सीरप

नौनिहाल ग्राइप सीरप दांत निकलने के दिनों के लिए विशेष रूप से बनाया गया है जो इन कठिन दिनों में आपके बच्चे की सहायता करता है यह मसूड़ों की तकलीफ, पेट दर्द बच्चे और दस्तों की शिकायतों में आराम देता है हाजमा ठीक रखता है और भूख बढ़ाता है। दांत निकलने के दिनों में बच्चे को सदा नौनिहाल ग्राइप सीरप दीजिए।

हमदर्द

नौनिहाल बेबी टॉनिक

बच्चों को भरपूर तन्दुरुस्ती और शक्ति के लिए नौनिहाल बेबी टॉनिक जिसमें विटामिन ए, बी, डी, बी कॉम्प्लेक्स और खनिज पदार्थ सम्मिलित हैं जिन पर आपके बच्चे की शारीरिक बढ़ोतरी और शक्ति निर्भर है। नौनिहाल बेबी टॉनिक से बच्चा मजबूत और तन्दुरुस्त बनता है चुस्त और हमेशा खेलता रहता है।

...और यह बच्चे की बढ़ोतरी के लिये.

HD 4974 H

किसी कहानी को पढ़ते समय क्या आपके दिमाग में कितना स्पष्ट होता है? क्या दृश्य कथानक या चीज़ लिखते वक्त बदलते भी हैं?

कई बार हम कहानी जानते हैं फिर भी कई बार लिखते समय हो वह बदलती है, इससे पहले हम नहीं जानते कि वह किस रूप में सामने आयगी. प्रक्रिया में आकर हर चीज़ बदलती है कई बार प्रक्रिया इतनी धीमी होती है [illegible]

एक सार्थकपूर्ण लेखन कार्य करते हुए क्या आप दूसरा साहित्यिक लेखन भी शुरू कर सकते हैं? या जिसे शुरू करते हैं पहले उसे ही पूरा करते हैं?

[illegible]

क्या आप पढ़ते समय लेखक के बारे में [illegible]

[illegible]

वास्तविक जीवन में उठाये चरित्र के कथा में परिवर्तित होने वाले चरित्र की प्रक्रिया के बारे में कुछ कहेंगे?

[illegible]

क्या आपने कभी निर्णय का विचलन किया है जिसका आपके कई व्यक्तिगत अनुभव रहा था

[illegible]

कथाकथ्य में वांछित ढाल में पहले किसी अनुभव से आप कितना अलगाव रखते हैं? समकालीन अफ्रीका में हुई राजनीतिक घटना, जिसमें आप थे?

[illegible]

क्या मैं आपसे पूछूं कि आपके विचार में लेखक को किस सीमा तक अपनी समकालीन सामाजिक-राजनैतिक समस्याओं से जुड़ना चाहिए

[illegible]

क्या आपका लेखन कभी उद्देश्यात्मक और प्रचारात्मक हो गया है

[illegible]

यह कहा जाता है कि लेखक जीवन और एक या दो विचारों के साथ (लेखन में) खत्म हो जाता है क्या आप सहमत हैं कि आपका लेखन एक या दो विचारों की प्रतिष्ठापना है?

[illegible]

अन्त में क्या आप पूछना चाहेंगे, एक साहित्यकार लेखक के रूप में आप अपने काम को उद्देश्य क्या मानते हैं, तथ्य को बजाय तथ्य को प्रस्तुति क्या?

[illegible]

● प्रस्तुति : प्रदीप पंकज

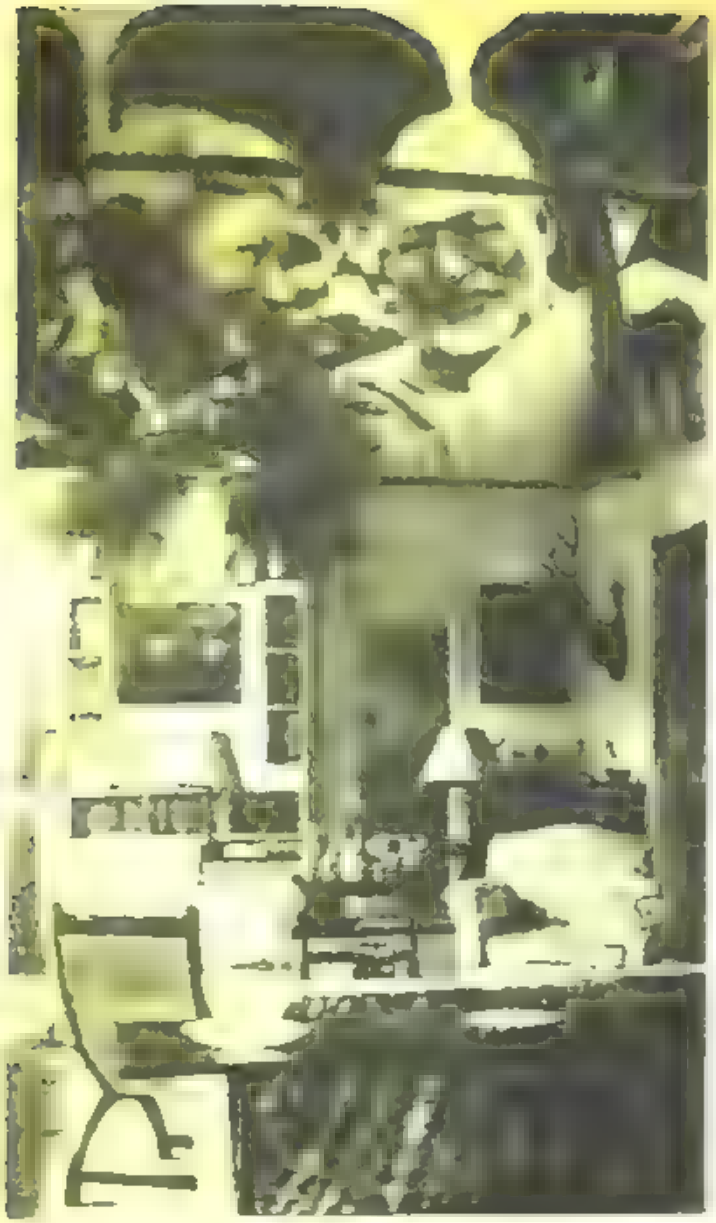

● हेमिंग्वे का कमरा जिसकी मेज पर आग बरसा या तूफानसा न दिखे तो लोग समझ जाते थे कि मेरी बेला आराधना यहां नहीं है

'किताबें बातें तो नहीं कर सकतीं'

... और एक अधूरा साक्षात्कार हेमिंग्वे की अंतिम पत्नी से

□ मेरी वेल्श हेमिंग्वे

हेमिंग्वे की पत्नी मेरी वेल्श हेमिंग्वे ने जब अपनी आत्मकथा (हाउ इट वाज) पूरी कर ली तो उसके कुछ प्यारे दोस्तों ने मेरी को सवालों में घेर लिया. बाहोश पत्रकार मेरी पहले तो सकते में आयी, लेकिन फिर जो उत्तर देने में डूबी तो डूबती चली गयी :

[illegible] बताया? सादे पान [illegible]

नहीं नहीं, अपने बारे में [illegible]

अरे यह सब बकवास नहीं, वह सब [illegible] जैसे कि आपने

यह आत्मकथा क्यों लिखी?

क्योंकि मेरे पास दो सौ [illegible]

आपने डायरियां क्यों रखी थीं?

[illegible] एक निरापद बिम्ब को देखकर [illegible] उसका [illegible] नाम [illegible] पड़ [illegible] और [illegible] के [illegible] पर [illegible] यह [illegible] पर [illegible] पर [illegible] पर

दुलारा था मेरा पति

"दु[illegible] ने पता चला कि वह [illegible] है तो [illegible] इस घटनाक्रम के बाद आई [illegible] से सम्पर्क की, "अब दुर्घटनाएं होने का सवाल नहीं है [illegible] मैं [illegible] पहले से [illegible] का सामना [illegible] करना पड़ेगा।

[illegible] से [illegible] के [illegible] से [illegible] के [illegible] वे लगातार रहीं। दुलारी सहगो के व्यवहार की यह [illegible] हो गया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्यार में [illegible] [illegible] [illegible] अपने दुलारे पति का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नोबेल पुरस्कार विजेता उपन्यास कैसे लिखा गया?

अनेकानेक कारणों से वे अंतिम दिनों काफी अशांत और उद्विग्न रहा करते थे इन्हीं दिनों एक मित्र से उन्होंने कहा था, "62 साल के एक व्यक्ति की कल्पना करो जो महसूस पाता है कि वह उन रचनाओं का सृजन नहीं कर सकता, जिसका वादा उसने कभी अपने आप से किया था.'

मित्र ने उन्हें याद दिलाया, '1938 में आपने अपनी कहानियों के संग्रह की भूमिका में कहा था कि आपको तीन अन्य उपन्यास तथा 25 कहानियां लिखने की आशा है. तीन उपन्यास आपके प्रकाशित हो चुके हैं, और कहानियों की संख्या तो 25 से ऊपर हो चुकी है."

"नहीं, इसलिए नहीं कि न लिखना कोई मजबूरी नहीं, पर यह अनुभूति कि मैं लिख ही नहीं सकता, ऐसी मजबूरी है जो सदा मुझे कचोटती रहती है. और विश्राम? कहीं लेखक भी विश्राम लेता है? और फिर प्रजेता लेखक?"

"समुद्र और बूढ़ा आदमी' लिखने का विचार आपके मन में कैसे आया था?" मित्र के नाते हेमिंग्वे को सहानुभूति से समझकर अपनी कृति 'हेमिंग्वे : लाइफ एंड वर्क आव ए वायर' में विशदता से चित्रित करने वाले पत्रकार-लेखक कार्ल सिगर ने उनसे पूछा था.

"संयोग से ही आया. एक सुबह मैं अपनी नाव में बैठकर समुद्र में मछलियां मारने के बारे में सोच रहा था कि मेरी भेंट एक बूढ़े आदमी से हुई, जिसने मुझे अपने एक अनुभव के बारे में बताया. घर आकर मैंने उस अनुभव को लिखना आरंभ कर दिया. पर, जो कहानी मैंने लिखी वह उस कहानी से भिन्न थी, जो उस आदमी ने मुझे सुनायी थी. यह उसके अनुभव की मेरी अपनी कहानी थी. कोई भी अच्छा पत्रकार किसी भी घटना या किसी और के अनुभव को अपने ढंग से व्यक्त कर सकता है. मैं मन से तो पत्रकार हूं ही. मैं ही क्या, पिकासो और गोया जैसे कलाकार भी मूलतः पत्रकार ही थे. अंतर केवल इतना था कि वे रंगों का प्रयोग करते थे, और मैं टाइपराइटर का प्रयोग करता हूं. इस उपन्यास को अंतिम रूप देने में मुझे अवश्य कठिनाई हुई. मैंने उसे कम से कम दो सौ बार लिखा."

बाद में सिगर की भेंट उस बूढ़े आदमी व्यूनास टाडंस से भी हुई. उसने स्वीकार किया, 'हेमिंग्वे ने मेरा जीवन ही बदलकर रख दिया.' उसको बस यही शिकायत थी कि उपन्यास के प्रकाशन के बाद हेमिंग्वे ने उसे वह नाव नहीं दी, जिसे देने का वादा उन्होंने किया था. पूछने पर हेमिंग्वे ने बताया था कि उन्होंने टाडंस से ऐसा कोई वादा नहीं किया था.

जिस दिन हेमिंग्वे को नोबेल पुरस्कार मिला

मैं रात देर से सोयी थी. अक्तूबर 28 का दिन. तड़के अर्नेस्ट मेरे बेडरूम में आहिस्ते से घुसे और आकर मेरी बांह पर थपकी देकर मुझे जगाया, "मेरी बिल्ली, ओ मेरी छोनी, सुन, यह चीज मुझे मिल गयी. अच्छा हो कि अब तुम जाग जाओ" एक रुकती-रुकती-सी मुस्कराहट, एक झुंझियों डूबी धीमी-सी आवाज.

"कुं?" मैं उनींदी हालत में ही बोली.

"हां, वही स्वीडिश चीज'

"मतलब कि पुरस्कार' नोबेल पुरस्कार' और मैं सेहरे से लेकर पैर तक अर्नेस्ट पर छा गयी, उन्हें दुलारती, झकझोरती, प्यार में डुबोती हुई, सिर से पांव तक अपना आपा खोये.

"ए! ए मेरे शेमने! पहले मैं बधाई कह लूं!"

"नहीं, पहला नंबर तो दोस्त के फोन ने मार लिया"

"उन्हें मारो गोली, मेरी बधाई लो."

"अब लोग आना शुरू कर देंगे."

"आने दो, पहले तुम्हें काफी देती हूं. फिर सबके लिए इंतजाम करूंगी." और मैं अपनी कमीज और जांघिये में उछलती हुई खुशी से फूली नहीं समा रही थी. थोड़ी देर में मेरी रसोई का एक-एक आदमी पार्टिया देने की तैयारी में डूबा हुआ था. रेना, सोनिया, विन्स सभी लगे हुए थे. देखते-देखते बधाई के तार, न्यूयार्क स्थित स्वीडेन के पत्रों के संवाददाता, इटरव्यू के [illegible], हवाना के सांध्यकालीन पत्रों के प्रतिनिधि, अमरीका और क्यूबा के टी. वी. और मूवी फोटोग्राफर, . . . सभी एक-एक कर टपकने लगे.

एक लंबे प्रशस्ति पत्र का हवाला देते हुए उन्होंने हमें बताया कि अर्नेस्ट को 'समुद्र और बूढ़ा आदमी' को सर्वश्रेष्ठ गौरव-कृति माना गया है, और यह कहा गया है कि अर्नेस्ट कथा-लेखन को एक नयी तकनीक को जन्म देने वाले कथाकारों में अग्रणी हैं.

अर्नेस्ट इस साहित्य-पुरस्कार के 47 वें विजेता थे अपनी उस दिन की घरेलू मनोरंजक स्पीच में अर्नेस्ट ने अंत में कहा था—'अभी पुरस्कार की राशि आयी नहीं है, इसलिए घर का कोई सदस्य उसे तलाशने की तकलीफ न करे. इच्छा तो है कि इस समूचे धन को हवाना के अपने दोस्तों के साथ बांट आते, लेकिन उनके दुर्भाग्य से इस धन से मैं अपना कर्ज चुकाऊंगा. अपना घर कई बार सेंधमारों का शिकार हो चुका है, लेकिन चूंकि यह पैसा बैंक में रहेगा, इसलिए सेंधमारों को निराशा ही हाथ लगेगी. . . . ' □

—मेरी वेल्श हेमिंग्वे

पा

'सर, आपके पिता कौन थे?'' जवाब में हेमिंग्वे ने लिखा था, ''सर, आपका मतलब है?'' जवाब में हेमिंग्वे ने लिखा था, ''सर, आपका मतलब है?''

क्या इस खत के लिखने हेमिंग्वे को हिम्मत देती है?'' के जवाब में वो उन्हीं उसी शब्दों में लिखा था, ''सर इन सबों में कनाडा लिखना चाहता है'' के जवाब इस बात के प्रमाण हैं कि लेखन और प्रकाशन को कहाँ कहाँ और संकट अभिव्यक्ति से हेमिंग्वे और उनका साहित्य जूझता रहे हैं इस दस्तावेज़ में एक संकट हेमिंग्वे के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया था इस संदर्भ में प्रस्तुत है आगे के पृष्ठ

लेखन से संबंधित समस्या इसी का संकट है
'सार्त्र अप ... दिया और 1958 में हेमिंग्वे ने
पुरुष दैहिक सामाओं से बाहर अपने
बदलने का प्रयास करने है

● एक समर्थ लेखन जिस 'मरे हुओं की भीड़' को गेलियों और 'सूरज भी निकलता है' को पार्टनिंग को पृष्ठभूमि में हेमिंग्वे ने जिंदगी के एक दशक जिताया (इटली) में पायल, 1918, कॅनेडियन के साथ में है के अलावा में 1954 अफ्रीका में, 1933, पाच महीने के शिप और पाच साल के बाद आने के रूप में

[illegible] कहानी [illegible] [illegible] [illegible]

● पिता-पुत्र : बचपन से ही पिता से उनको पढ़ने का शौक बढ़ा। पिता ने ही शिकार करने का शौक दिया, आजादी का महत्व दिया और दुस्साहस जीने का साहस दिया। अर्नेस्ट हमेशा कहते, "मैं अपने पिता से ज्यादा बूढ़ा लगता हूं"

[illegible] हेमिंग्वे ने कर्णफाड़ दी और उसका [illegible] को [illegible] दिया। [illegible] दोनों फेफड़ों पर गम्भीर [illegible] गये।

हेमिंग्वे ने अनेक युद्धों में जाकर इन अनुभवों [illegible] मार्मिक कर दिया। वह स्पेन के गृह-युद्ध और दूसरे [illegible] को नोबल रहा है। वह विश्व लगा में [illegible] एक [illegible] रहा।

पापा का अभयारण्य पार्टी-गिया का इशारा [illegible] कि एक ओर हेमिंग्वे है जिसे नया पौधों का नये आदमी में [illegible] है [illegible] जिस आदमी का हम बोलने है उसमें विरोध एक नये आदमी को हमारे सामने प्रस्तुत करती है उसके [illegible] पर [illegible] पर बोलो से उसका जो आलोचक लगाव था [illegible] चरित्रों के लिए [illegible] विशेषण की भूमिकाओं का जन्म दिया अर्नेस्ट हेमिंग्वे वह आदमी होना चाहता [illegible] [illegible] शिकार के लिए घर से बाहर जाने के और फिर घर लौटकर अपने नये में रहने का उसकी [illegible] प्रेम करने के उसका व्यक्तित्व गहरे अन्तर्विरोधों से निर्मित हुआ था वह एक [illegible] ज्यादा और कुछ था।

उसका पुराना महानेवा को पढ़ने [illegible] महसूस हुआ है कि एक मान को देख रहे हैं जो गलत पत्थर की है बंदूक हाथ में लिये है और मन जानवरों के [illegible] [illegible] बजा में मजबूत पर यह धारणा बदल जाती है उसे पढ़ने के बाद लगता है कि हम एक मनि से मुठभेड़ कर रहे हैं।

● हेमिंग्वे अपनी एडमुस्किला के बीच खड़े हुए

हेमिंग्वे : एक उद्दाम व्यक्तित्व

एक आदमी का सब से आखरी, अंत और बेहतरीन सही या कल्पित अपने महान होने की प्रक्रिया से गुजर रहा था, एक रचनात्मक प्रयत्नशील [illegible] जिसे ईश्वर प्रदान करता है कल्पित कर लेता है या आदमी [illegible] रचना में रहकर अंकित करना है हेमिंग्वे ने अपने जीवन में क्या खोया क्या पाया और इसके लिए कैसे क्या-क्या किया—उनके व्यक्तित्व को लेकर प्रस्तुत लेख में इसी की चर्चा की गई है

उसने लेखन के क्षेत्र में छलांगे लगायी थीं

[illegible]

"वो

[illegible] दुनिया [illegible] है और वो मिट [illegible] और मजबूत [illegible] दुनिया के अलावा एक इंसान [illegible] मिलता साहब दिखाया इसने [illegible] पर [illegible] इंसान का कितना बड़ा दिखाया। [illegible] इनका स्वयं यहां हार बनी जिंदगी का है दूर से आपने [illegible] और आसपास दिखायी।

जितने निकट से दरख्त [illegible] हो अधिक दाग नजर आएंगे आपको पर शहर पर दिल पर दाग ही दाग है

1918 में वे स्वयंसेवक एम्बुलेन्स ड्राइवर मोर्चे हाकर इटली के पद मार्चे तक [illegible] मोर्चे से घायल हो [illegible] हो गया था अस्पताल लौटने पर उनकी [illegible] से किसी को नर्स पर से प्रेम करने [illegible] प्रेमी हो और सहनशीलता [illegible] सम्मान करना हो।

पहली शादी

उनकी पहली पत्नी [illegible] से हुई थी [illegible] इलस्ट्रेटर थे और हेमिंग्वे [illegible] इलस्ट्रेटर बनने की शादी थी [illegible] इलस्ट्रेटर बनने का [illegible] बनना चाहते थे, भले ही पैसा न मिल [illegible] मिल गया पुनर्जन्म [illegible] से संसार [illegible] होकर [illegible] कहानीकार।"

अमेरिका में उन्हें [illegible] अपना काम स्वयं बनाया इस संबंध में 'अमरीकी को रचनात्मक बनाने वाला एक होमरी शाप है इस आदर्श संसार के उस ओर हिमाच्छादित [illegible] रख लेंगे [illegible] लिखा [illegible] में [illegible] मेडीटेरानियन की [illegible] [illegible] विकास [illegible] [illegible] में [illegible] जैसी [illegible]

इसी दिनों उन्हें एक [illegible] मिल गया [illegible] वे 'आउटडोर्स [illegible]

● हजरत ख्वाजा के मजार के सामने अपना चित्र खिंचवाते हुए [illegible]

दुनिया की दिशाएं हो सकेंगी

पत्रकारिता में [illegible]

महान उपन्यास का सृजन

सांड़युद्ध और हेमिंग्वे

सां[illegible]एड हेमिंग्वे की दृष्टि में [illegible] अपनी असाधारण दृष्टि [illegible] इन दो आदमियों के टकराने [illegible] इन दो आदमियों और सांड के द्वंद्व को आधार बनाकर सांड़युद्ध पर इसमें डेढ़सौ उपन्यास नहीं लिखना।

हेमिंग्वे की दृष्टि में आदमी और सांड का युद्ध एक खेल नहीं, अपितु जीवन के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण है। मौत का सामना करने का रुझान मोटर्स इसमें है. इस उपन्यास के माध्यम से उसने एक युग का सत्यान्वेषी के सन्दर्भ में करने का दावा भी प्रदान किया है.

इस उपन्यास की प्रशंसा भी हुई और निंदा भी। आलोचक इसमें एक [illegible] इसमें [illegible] उपन्यास में हेमिंग्वे इसमें [illegible] आदमी [illegible] एक [illegible] के अनेकार्थ [illegible] [illegible] को बहुआयामी एक [illegible] भी [illegible]

पर, इस घटना का प्रभाव न उपन्यास की लोकप्रियता पर पड़ा, और न इन दोनों की मित्रता पर.

अपने एक अन्य उपन्यास 'द ग्रीन हिल्सों ऑफ आफ्रीका' में हेमिंग्वे ने एक ऐसे बहाना को अंकित किया है, जो वास्तविक जीवन में उनका घनिष्ठ मित्र होने के अलावा अपने क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ बहाना भी था.

जब एक दृश्य में एक भाड़ ने एक अन्य बहाना हेमिंगवुइन का आक्रमण किया तो अस्पताल में उसमें भेंट करने के बाद हेमिंग्वे ने अपने एक मित्र से कहा था, 'वह एक दिलेर आदमी और उच्च कोटि का बहाना है. न मालूम क्यों, ऐसे लोग ही साधारण आदमियों की अपेक्षा मौत का शिकार बनते हैं'

● [illegible]

जब हेमिंग्वे क कोर्टमार्शल हो होते बचा

द्वितीय महायुद्ध के आरंभ हो, हेमिंग्वे कीरन 'कॉ यर्स' पत्रिका के युद्ध-संवाददा बनकर जनरल पैटन की सेना साथ यूरोप पहुंच गये. सवाद भे का तो एक बहाना था, युद्धकाल में उन्होंने 'कोलियर्स' कुल छह रिपोर्ट भेजीं—वे। युद्ध में भाग लेना और मार्ग नेतृत्व करना चाहते थे. वहां उन एक बार अपने एक साथी से था, "बेचारे अननुभवहीन लड़को बेकार युद्ध की आग में झोंका रहा है, जबकि मन [illegible] और युद्ध-प्रिय इंसान [illegible] हाथ बंदूक तक नहीं है

नार्मंडी के आक्रमण [illegible] सा दे फ्रांसीसी तट पर [illegible] पहली अमरीकी सेना में [illegible]

हेमिंग्वे की आयु उन [illegible] वर्ष से अधिक थी। इस [illegible] उ सेना में नहीं लिया जा [illegible] पर वे युद्ध में भाग लेना [illegible] ये उन्होंने बिना दिमाग [illegible] अपने पूर्वपरिचित फ्रांस में [illegible] कार्य करना शुरू कर दिया। [illegible] रोकी कर्नल लेकलर्क के अनुसार 'हेमिंग्वे के जासूसों [illegible] सैकड़ों अमरीकियों को [illegible] बचायी, और मित्र-सेनाओं के फ्रां पर अधिकार करने के कार्यक्रम [illegible] अवधि का आधा कर दिया। हेमिंग्वे ने छापे में कई गोरिल्ला टुकड़ियों का संचालन भी किया थ

कुछ लोगों ने हेमिंग्वे का इ आधार पर कोर्टमार्शल कराने चाहा कि किसी युद्ध-संवाददाता को जेनेवा-समझौते के अनुसा युद्ध में भाग लेने का अधिकार नहीं है परन्तु अमरीकी सेनाधिकारियों ने इस मामले को आगे नहीं बढ़ाया।

● मार्लिया और बड़े सिरों का। मानो दुःख बन हेमिंग्वे

मछली की छह बोतलें : हेमिंग्वे के छह सबक

● अहमद

हेमिंग्वे तथा अन्य कई वरिष्ठ अमरीकी आलोचकों और लेखकों के घनिष्ठ मित्रों में एक उनके समकालीन आलोचक-मंत्रकाम कालें दूसरों की अपेक्षा चीजों को तनिक भिन्न दृष्टि से आंकते हैं. इस नजरिये से उन्होंने हेमिंग्वे के आलोचकों को 'उनके हत्यारों' के रूप में रेखांकित करते हुए इसके सामाजिक और राजनीतिक कारणों का भी उल्लेख किया है. इस संदर्भ में यह जानना अत्यंत रुचिकर और प्रासंगिक होगा कि विदेशप्रस्थान लेखक को उसके अपने ही देश में किस निगाह से आंका जाता रहा है. यह प्रसंग कुछ इसी तरह लगता है जब आज भारत में कई लोग प्रसाद को भूल जाने की बात कर रहे हैं.

श्रीमान पापा तथा पापा के हत्यारे

यह सारा गोरखधंधा खोयी प्रतिष्ठा पाने के लिए है

▣ [illegible]

"म[illegible] [illegible] [illegible] [

यह तो गोदडनामा हुआ!

भगवान और आत्मोद्धार

भगवान से मेरा कोई पारलाप नहीं है, इसलिए मैं नहीं जानता कि वे पक्षपात भी करते हैं या नहीं।

रहा तक आत्मोद्धार का प्रश्न है, जिसने हमको चिंतित कर रखा है। मेरे लिए तो सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मेरे जो प्रयोग-पथ जीता है, उसे कायम रखूं, भले ही इसके लिए मुझे अपनी आत्मा ही क्यों, किसी और वस्तु का बलिदान भी क्यों न करना पड़े।

—हेमिंग्वे

[illegible] आना समग्र समझ-बूझ के साथ, [illegible] सामान्य से [illegible] [illegible] हजार [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] ने [illegible] के पीछे दीवार पर लगी घड़ी पर देखा
[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [

"तब तो हमें खाना चाहिए"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, हमें क्या खाना चाहिए?" जॉर्ज ने पूछा

"मैं तो कहूँगा, हमें कुछ हल्का-फुल्का खाना चाहिए," खानसामा बोला, "कुछ ऐसा जो जल्दी से तैयार हो जाए"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, हमें क्या खाना चाहिए?" जॉर्ज ने निक से पूछा

"मैं तो कहूँगा, हमें कुछ हल्का-फुल्का खाना चाहिए," खानसामा बोला, "कुछ ऐसा जो जल्दी से तैयार हो जाए"

वह अपने सिर के नीचे दो तकिये लगाये हुए था उसने निक की ओर नहीं देखा

"क्या हुआ?" उसने पूछा

"मैं होटल के काउंटर पर था" निक ने कहा "वहां दो आदमी आकर खड़े हो गये। उनमें से एक ने कहा कि वह उसे ले जाने के लिए आया है" यह कहते हुए उसकी आवाज बिल्कुल सपाट थी। वह सुनी हुई कहानी सुना रहा था। "इस व्यक्ति ने मुझे किचन में बड़ा चाकू दिखाया" निक बोलता गया "वे मुझे बाहर ले जा रहे थे, जब तुम स्वर की आवाज सुनी थी।"

एडमंसन कुछ नहीं बोला। वह चुप रहा और देखता रहा

'आज मैं सोचा कि मुझे आकर तुरंत स्थिति से अवगत करा देना चाहिए"

"मैं उनके बारे में सुनकर बताता हूं

"मैं नहीं जानना चाहता कि वे कौन थे" कुछ क्षणों दीवार की ओर देखने बाद बोला, 'तुमने आकर इस संबंध में बताने का कष्ट किया इसके लिए धन्यवाद"

वह ठीक है' निक ने फर्श पर लेटे उन दोनों आदमियों को देखा

तुम क्या नहीं चाहते कि मैं पुलिस के पास जाऊं?'

नहीं एडमंसन बोला 'इससे कोई फायदा नहीं होगा'

क्या इसके बारे में मैं कुछ कर सकता

कहना चाहता है

मुंह करना घर वा में बाहर जाऊं, या

यही है

गया

निक

अंधेरा हो गया है" एडमंसन ने कहा उसने निक की ओर नहीं देखा

निक बाहर चला गया दरवाजा बंद करने बाद उसने एडमंसन को फर्श पर पड़े दोनों की ओर ध्यान से देखा

□

वह सारा दिन कमरे में रहा है मकान मालकिन ने नौकर भेजकर पूछा

नहीं है मैंने उससे कहा

बाहर जाना चाहिए . पर उसकी इच्छा नहीं थी"

वह बाहर जाना नहीं चाहता"

समझता है कि उसकी तबीयत अच्छी नहीं है" जॉर्ज बोली वह कल अच्छा हो जायेगा तुम फिक्र न करो

क्या है"

यह ठीक नहीं है

अच्छा किया है

हुआ सिर एडमंसन से

हुआ निक बोला वह अपना कमरा छोड़ने और बाहर नहीं निकलता"

निक की आवाज

नहीं

निक ने कहा

" तीन बजकर पचास मिनट हुआ है

इसके बारे में बेहतर हो कि वह कहां जा सकता है निक

'कोई जानता है कि वह मरने वाला है कुछ लोग इसे जानते होंगे और वह जानता होगा वह अपने कमरे में पड़ा पड़ा सोच रहा होगा यह बहुत नाजुक स्थिति है बेहतर होगा"

'मैं आज रात सोचने में क्या होगा □

● रूपांतर : शारदा राय

भारतीय अंग्रेजी कहानी

शीशे के घरों का गीत

• राजन खन्ना

अमरीका में जन्म लेकर हेमिंग्वे सिर्फ अमरीकी लेखक बनकर नहीं रह गया. वहां के आम आदमी की यातना को जो अभिव्यक्ति उसके कथा साहित्य में हुई, उसने न सिर्फ दुनिया की तमाम भाषाओं के पाठकों को अपनी गिरफ्त में ले लिया, बल्कि उन देशों के तमाम सारे लेखकों ने भी अपने आपको हेमिंग्वे की गिरफ्त में पाया. हेमिंग्वे के रचनात्मक एहसासों के प्रभाव में अमृतसर की जिंदगी की आमद स्थितियों के बीच से उठायी गयी इस भारतीय अंग्रेजी कहानी से पाठक दुनिया के साहित्य पर हेमिंग्वे के प्रभाव का आयाम ले सकते हैं.

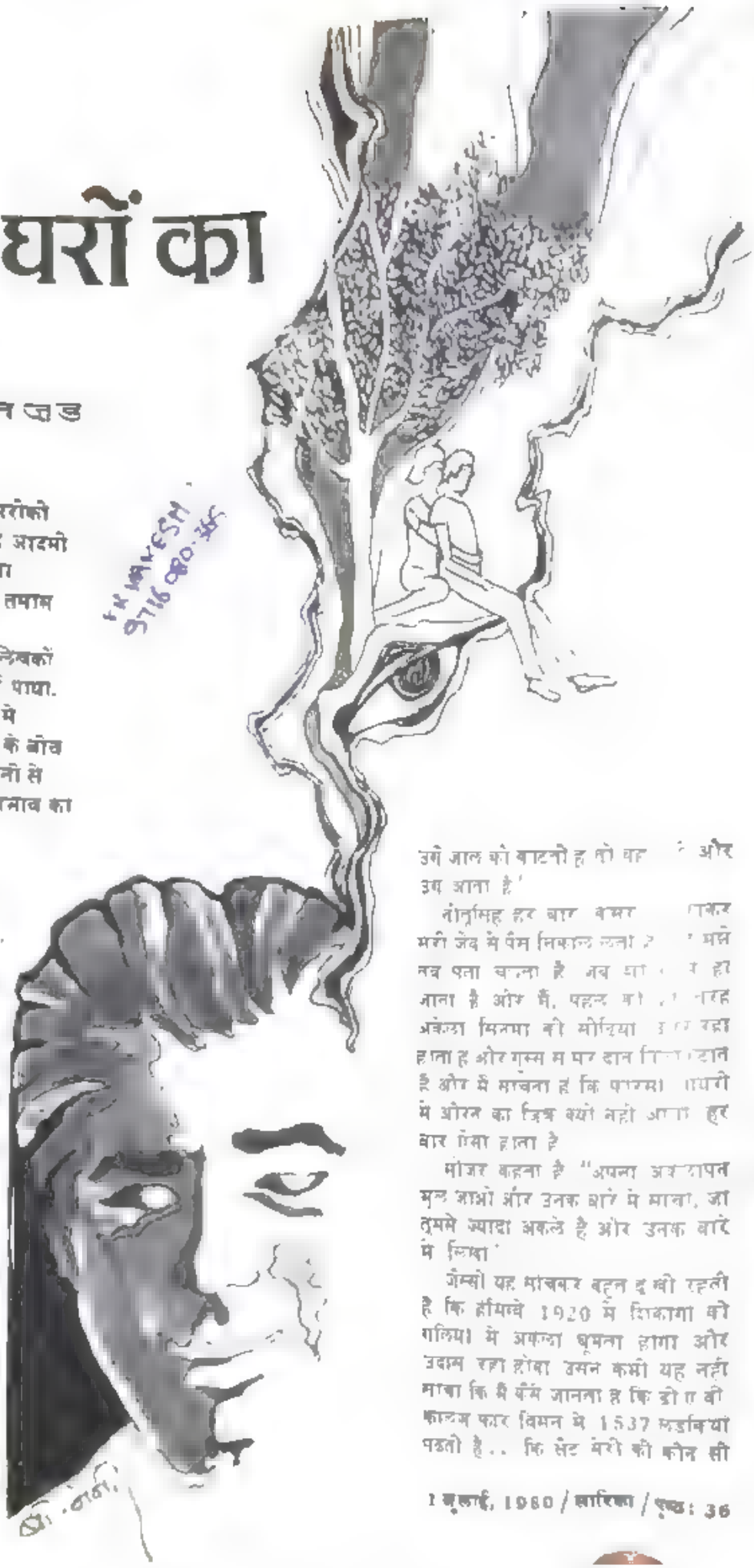

"कहीं कुछ नहीं होता"

मोंजर नारे लगाता रहता है, उपदेश देता रहता है

जैम्मी (यह उसका असली नाम नहीं) शीशे के पीछे से छिपते हुए सूर्य और बारिश का देखती रहती है और सोचती है कि हेमिंग्वे के लाट कैसे काम होंगे, जब उसने लिखा 'प्यार कुदरत है"

मैं आत्मग्लानि करता रहता हूं और अक्तूबर के महीने में, जब अमृतसर का तापमान 25° सेंटीग्रेड होता है और अमृतसर की लड़कियां बहुत शोख रंग के कपड़े पहनती हैं गवनमेंट कालेज फार विमन के सामने लगे टाहली के पेड़ों के नीचे खड़ी, आती-जाती लड़कियों का देखना उनके कपड़ों के नीचे छिपे अंगों का अनुमान लगाता रहता हूं

"राजनीतिक अंधेपन ने यहूदियों का इकट्ठा कर दिया है"

जैम्मी कहती है "मैं स्वयं को और अधिक जानना चाहता हूं, परन्तु जब मैं अपने आस-पास, ऊपर-नीचे, इर्द-गिर्द उगे जाल को काटता हूं तो वह और उग आता है"

मोंजर हर बार बेकर से लौटकर मेरी जेब में पैसे निकाल लेता है मैं उसे तब पता चलता है जब वह जा चुका होता है और मैं, पहले की तरह अकेला सिगरेट की खिड़की खोल रहा होता हूं और गुस्से में पर्स को दीवार पर दे मारता हूं और मैं सोचता हूं कि फ्रायड की थ्योरी में औरत का जिक्र क्यों नहीं आता हर बार ऐसा होता है

मोंजर कहता है "अपना अजनबीपन मुझ जैसों और उनके बारे में सोचो, जो तुमसे ज्यादा अकेले हैं और उनके बारे में लिखो"

जैम्मी यह सोचकर बहुत दुःखी रहती है कि हेमिंग्वे 1920 में शिकागो की गलियों में अकेला घूमता होगा और उदास रहा होगा उसने कभी यह नहीं सोचा कि मैं कैसे जानता हूं कि डोरोथी कालेज फार विमन में 1537 लड़कियां पढ़ती हैं... कि सेंट मेरी की कौन सी

सकती की चिंता सब छोड़ा हारी है और यह घर पैसे वालों है कि गवर्नमेंट कॉलेज पार विमल के पिता [illegible]

सॉजर उन डबडबाए क्षणों के गवन बना रहता है, जब वे और जैम्सी मुलायम दूब पर बैठे होंगे और हम दोनों के ठीक ऊपर इमली [illegible] होंगी और सामने सलीके से सजोया गया भविष्य

■

मैं उस सफेद बाघ की तरह हो गया हूं, जो साथी के बिना अकेला और उदास पिंजरे के एक कोने में पड़ा रहता है

चिड़ियाघर के अधिकारियों का कहना है कि इस देश में मेरा साथी मिलना संभव नहीं और इसके पास सफेद बाघिन आयात करने के लिए पैसा नहीं है इसलिए मैं अपना जीवन [illegible] में गुजार रहा हूं साथ की प्रतीक्षा में [illegible] शायद कभी नहीं मिलेगा

▣

अमृतसर [illegible]
[illegible]
घर [illegible]
उन [illegible]
है, और [illegible]
अमृतसर [illegible]
चमकता है [illegible] घर है
तथा [illegible]
अमृतसर [illegible] घर बोधसा (फाइनेंस [illegible] अमृतसर जिले में पंजाब में [illegible] और पुलिस थाने तथा पुलिस चौकियां [illegible]

▣

बैम्सी अब गाड़ियां निकालती है तो उसका मुंह कुछ इस तरह से खुलता है कि बहुत अच्छा लगता है वह नयी-नयी गालियां ईजाद करती रहती है और उनका पहला प्रयोग मुझ पर झाड़ती है उसने वाल्ड अर्थ वाले तीन शब्द कहे हैं—व्हाट फिटलिंग', 'वाई ब्लाट' और 'बैचलस सन

सॉजर मुझसे पूछता है, "वो और दो [illegible] [illegible] अमृतसर है" और खड़े हो [illegible] है, "आए सोदया

[illegible] अमृतसर

मैं सोचता हूं कि पाठक से मुखर अन्तर्वार्ता

तस्वीर बोलती है

1

2

3

5

6

होमवर्क की रचनाएं दो

दूसरे विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित
विश्वप्रख्यात उपन्यास ए फेयरवेल टु आर्म्स का रूपांतर

हथियारों को विदाई

LIBRARY ESP
954.05 Gu.365

'हथियारों को विदाई' उपन्यास के सब से पहले अमरीकी संस्करण का आवरण चित्र— 1929

इस [illegible] के [illegible] पर हमला करना [illegible] है। अगर समस्त में ओनावादा सब से महत्वपूर्ण है। लेकिन यही सर्वोपरि कारण नहीं है। हमें [illegible] पहाड़ [illegible] में [illegible] पहाड़ों पर युद्ध करने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं है।

[illegible] की बैरिकों में आकर श्रद्धा थी। उसने खेद प्रकट किया कि फ्रंट में सिपाहियों को पर्याप्त भोजन नहीं मिल पा रहा है। उसने कहा कि हम बहुत खाने हैं। खाने की भी कमी नहीं है। लेकिन सिपाहियों को खाना नहीं मिलता, यह बुरी बात है।

मैंने कहा, "इसमें युद्ध [illegible] होता हो सकता कुछ खाने की आदतों का असर है।"

वह खाने के बारे में बात नहीं करना चाहता। यह बात बहुत हो चुकी है। [illegible] कहा, "हमको आशा थी अगली दशाब्दि और पायेदार शांति [illegible]।"

[illegible] बात थी। अलबत्ता सरकार बारिश में दुश्मन ने बम गिराये अंधेरे में लड़ाई निरंतर चलती रही। [illegible] सिपाही [illegible] कुछ [illegible] पर चौकी में आने [illegible] एक चिकित्सा अधिकारी ने आगाह की थी कि यह हमला अमन का आगाज है। हमारा दायित्व था कि हम घायलों को सरहद पार कराके उन्हें कॉर्नीशिम स्टेशन तक पहुंचायें।

[illegible] के रास्ते गांवों में स्थित अस्पतालों में [illegible] हमें [illegible] के [illegible] को [illegible] का काम [illegible] था।

[illegible] तक हम गोरीजिया पहुंच गये थे। [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] में

रचना एक शीर्षक उन्तीस

क्या 'हथियारों को विदाई' उपन्यास के कुछ इसके शीर्षक भी दिये जा सकते हैं? हमारे पास प्रेमिकाओं से एक पुर्जा प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के आस पास लिखित अपने इस उपन्यास के 29 संभव शीर्षक लिखे हैं:

—युद्ध में प्रेम
—आनंद के लिए वेदना
—हथियारों को विदाई
—विवाहित बुद्धिमानी
—बलात्कार
—अगर तुम प्यार करो!
—बेकार संसार और समय
—[illegible]
—[illegible] अन्य कारणों के बारे में.
—[illegible]
—[illegible]
—[illegible]

[illegible] हम पैदल ही चलते रहे

[illegible] पहाड़ पर [illegible] की तरह [illegible] पर [illegible] के [illegible] हम [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

'...यह सब खत्म हो गया है।"

...सामने बातचीत का सिलसिला तोड़ते हुए मैंने कहा, "मैं ...

...अगर युद्ध खत्म होता है तो इसका कोई अंत नहीं होता," सियानी ने कहा, "लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि यह खत्म होगा। खत्म हो जाय तो मुझे खुशी होगी।"

'हम शीघ्र ही इसके खत्म होने का शुभसमाचार सुनेंगे," मेरा विश्वास था।

'मुझे इसके खत्म होने में ...विश्वास है। हम सोचते हैं कि यह खत्म होगा, लेकिन मैं विश्वास नहीं करता।

अमहर्मनि के स्वर में एक सिपाही ने चीखकर कहा, "हम घर जा रहे हैं!"

"यह बेहतर होता अगर हम सभी घर चले जाते," सियानी ने कहा, 'क्या तुम घर नहीं जाना चाहोगे?'

हां!"

'हम कभी नहीं जायेंगे। मुझे नहीं लगता कि युद्ध खत्म हो गया है।"

एक सिपाही ...

...कई ट्रक ...

...अफसर ने पूछा।

...ने आंख से इशारा करते हुए अफसर कुछ न बोल सका।

'यह ...' अफसर का आदेश था।

'अफसर ...' हमें शांति चाहिए।'

सियानी ...भागती भीड़ की भीड़ में से हमने दो ब्रिटिश ...

मेन ...

"हो ...कहता है कि युद्ध अभी और चलेगा। अमे...कहता है मगर हमें है कि वे झूठे हैं।" मेन बड़बड़ाया।

'मैं भी ...युद्ध ...जानता।' सियानी ने कहा। वह तब अकेला ...लगता था। उसकी आंखें बहुत बड़ी थीं। वह बहुत बड़ा बातचीत करने वाला साबित हुआ।

क्या तुम विवाहित हो?

...दिया।

"क्या इसलिए तुम बेटी नहीं चलना चाहते?

'यह एक कारण हो सकता है,' सियानी ने कहा, 'क्या तुम विवाहित हो?'

नहीं।

'चाहते भी नहीं थे।'

तुम एक आदमी के विवाहित होने को लेकर कोई समस्या नहीं निकाल सकते। हां यह जरूर है कि एक विवाहित आदमी घर लौटकर अपनी पत्नी के पास जाना चाहता है," मेन बड़बड़ाया।

सुबह में पहले हम टैग्लीमेंटो के किनारे पर पहुंच गए और बाद में आयी हुई नदी के पुल की तरफ बढ़े, जहां से सब लोग

शिक्षक

"मैं पॉल मंजा को लेकर कैरिकेचर बना सकता हूं। मैं जब ग्रांडहोटल के अजायबघर में मैकडोनाल्ड की कला सीखों को देखता हूं तो मुझे विश्वास है कि अगर आज पॉल मंजा जीवित होता, तो उसे मेरा कैरिकेचर बनाना पसंद आता और वह खुश होता कि संग्रहालय में कैरिकेचर चित्रित करने की यह कला मौजूद है।"

—हेमिंग्वे

...

...

...

अखाड़े में

[illegible] प्रकार के [illegible]
[illegible] और [illegible] को इस [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

सिपाही

ती

बैठा जो सामने पानी में मस्त था

युवक ने अवज्ञापूर्ण नजर को निरादर करते हुए खड़ा होकर, 'ऐसा लगता है कि तुम एक सिपाही हो

हां मगर तुम्हें कैसे पता लगा

अपना अंदाज का ठीक ही है, यह जानते ही बेहद खुशी के साथ उसने आगे आकर 'मुस्कान आपकी में मेरी आखों के सामने

हेमिंग्वे की कहानी : इंडियन कैंप

इ

● पेन्सिल स्केच

सो, यह है पेरिस!

जिंदगी के टकरावों का जिंदा ज़र्रा

समुद्र और बूढ़ा आदमी

'स

प्रस्तुति : वेद प्रक रपो

● पुस्तक रूप में प्रकाशित सर्वप्रथम अमर
का आवरण चित्र

पंजों पर टिका एक संपूर्ण दिन

दि [illegible] उसने पंजाबलोग के महान लोग [illegible] निडाने की घटना की याद [illegible] नाकनबर नोगा था [illegible] पंजा भिड़ाए रह [illegible] पर टिकी हुई थी और [illegible] हुए थे लाख शत [illegible] राहाना से अंदर बाहर आते-जाते नोगा को घोर [illegible] उसके चेहरे को [illegible] पर बाद [illegible] नोगा के पक्ष [illegible] और वे एक-दूसरे की आंखों में आंख गड़ाये बैठे थे

[illegible] बदलते रहे कभी उसका पलड़ा भारी होता तो कभी नोगा का [illegible] ने नोगो को रम पिलायी और सिगरेट जलाकर दी रम पीने के बाद नोगा पूरी ताकत लगा दता और एक बार उसने [illegible] हरा ही दिया था पर उसका नाम भी मरियागो था उसका पंजा मेज से लोहा [illegible] रहा मरियागा अपना पंजा फिर ऊपर शुरू की हालत में ला [illegible] आया उसे एकदम एकोन था कि उसने नोगा पर [illegible] दिया है उस नोगा पर, जो एक बढ़िया इंसान [illegible] पड़ा था मुद्दत तक शत लगाने वाले [illegible] मरियागा [illegible] रेफरी भी मिर [illegible] मरियागा ने अपनी पाशिश की। तेज कर दिया [illegible] पंजे को नीचे मेज पर झुकने की। मजबूर कर दि [illegible] मेज पर टिका हुआ था मुक्का। बना हुनवार [illegible] और लामवार की मुक्का खत्म हुआ शर्त लगा [illegible] रुपयों की गादी में [illegible] बारों का खेल [illegible] पर मरियागा का हकदार मे कायले की कंपनी में काम [illegible] था इसी वजह से सभी मरियागा बराबरी पर [illegible] और वे रह थे पर मरियागा ने काम पर जाने [illegible] मरियागा खत्म कर दिया □

● [illegible] मरियागा [illegible] मरियागा [illegible] मरियागा

हृषिकेश श्री रवीन्द्रनाथ : छात्र

मौसी कैसे आती

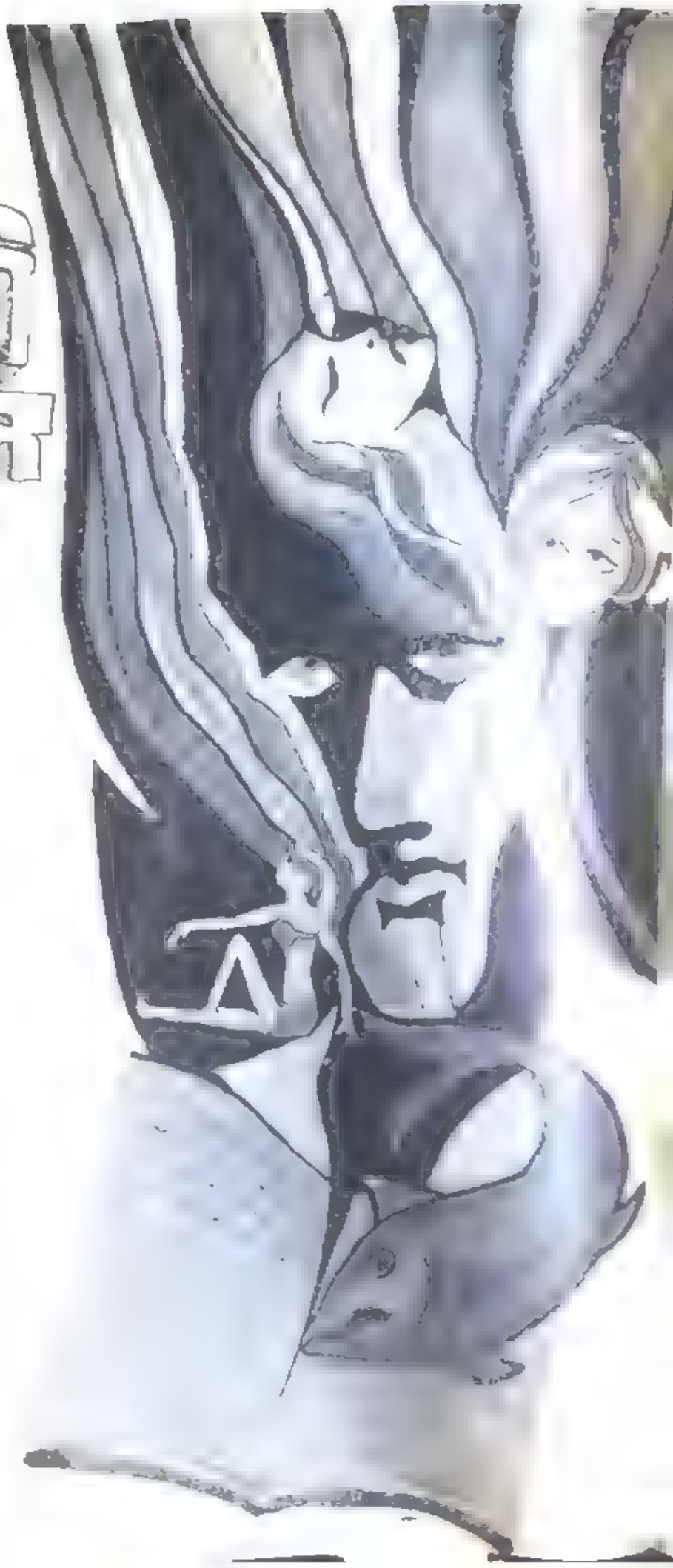

जीवन बीमा अब कहीं अधिक आकर्षक और किफ़ायती भी।

भारतीय जीवन बीमा निगम

"आत्मकथा लिखने का विचार मेरे मन में कभी नहीं आया"

जब एक पत्रकार हिमाचल के दूरदराज़ गाँव के इलाके में उनके पास आया, ना से कहने लगा, 'मेरा प्रकाशक दूरदराज़ के गाँवों, छोटे कस्बों से अनेक लोगों से आत्मकथा लिखने का विचार कर रहा है। क्या आपने आत्मकथा लिखने वाले लोगों को पढ़ा-सुना कर रहे हैं कि उन्हें जो कुछ कहना था या करना था, वह उन्होंने कर लिया और कर लिया। मुझे तो इनमें कुछ कहना है, काफी कुछ करना है।

अपने बारे में जो कुछ अपनी प्रकाशित कृतियों में नहीं कहा है और उन बातों, घटनाओं और कहानियों में कहा है, जो अखबारों में छपे या छोटी-बड़ी बैठकों में कहे हैं। मैं रूढ़िवादी परिवार में जन्मा-पला-बढ़ा हूँ। मेरे परिवार में जो कुछ घटा है और मेरे पाठकों को जहाँ तक भी पढ़ने को मिला है, उसमें मैंने कहीं नहीं कहना चाहा।

मेरे बारे में अनेक गलत धारणाएँ प्रचलित हैं। उदाहरणार्थ मेरी आमदनी को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है। मेरा जो अनावश्यक खर्चे हैं, जो भारी टैक्स मुझे चुकाना पड़ता है, उसके बारे में कोई हिंदुस्तानी नहीं सोचता। आपका विश्वास हो या न हो कि जब मुझे साहित्य-पुरस्कार मिला था, उस समय मुझपर 8000 डॉलर कर्ज़ था। ऐसे हालात के बारे में मैंने कभी नहीं सोचा।

साठ साल का हूँ शायद इतना स्वस्थ नहीं हूँ, जितना मुझे होना चाहिए पर, इससे क्या? दुस्साहस, जानलेवा और खतरे के प्रति मेरा आकर्षण आज भी उतना ही है, जितना पहाड़ों में घर छोड़कर अज्ञातवास में रहने वाली मात, उसका अशोभनीय सरोदे अनैतिक पेय और बहुपत्नीवाचन आज भी मुझे साहस [illegible] मेरे पिता ने आत्महत्या की थी, मेरी आयु अधिक नहीं थी जब मा[illegible] यह कृत्य कायरतापूर्ण लगा था, लेकिन आज [illegible] नहीं मानता, बशर्ते वह तब की जाय जब आदमी का [illegible] शर्तों पर नहीं जी सकता

[illegible]

[illegible]

[illegible]

...

...

...

ख़ून के रिश्ते कितने गहरे...

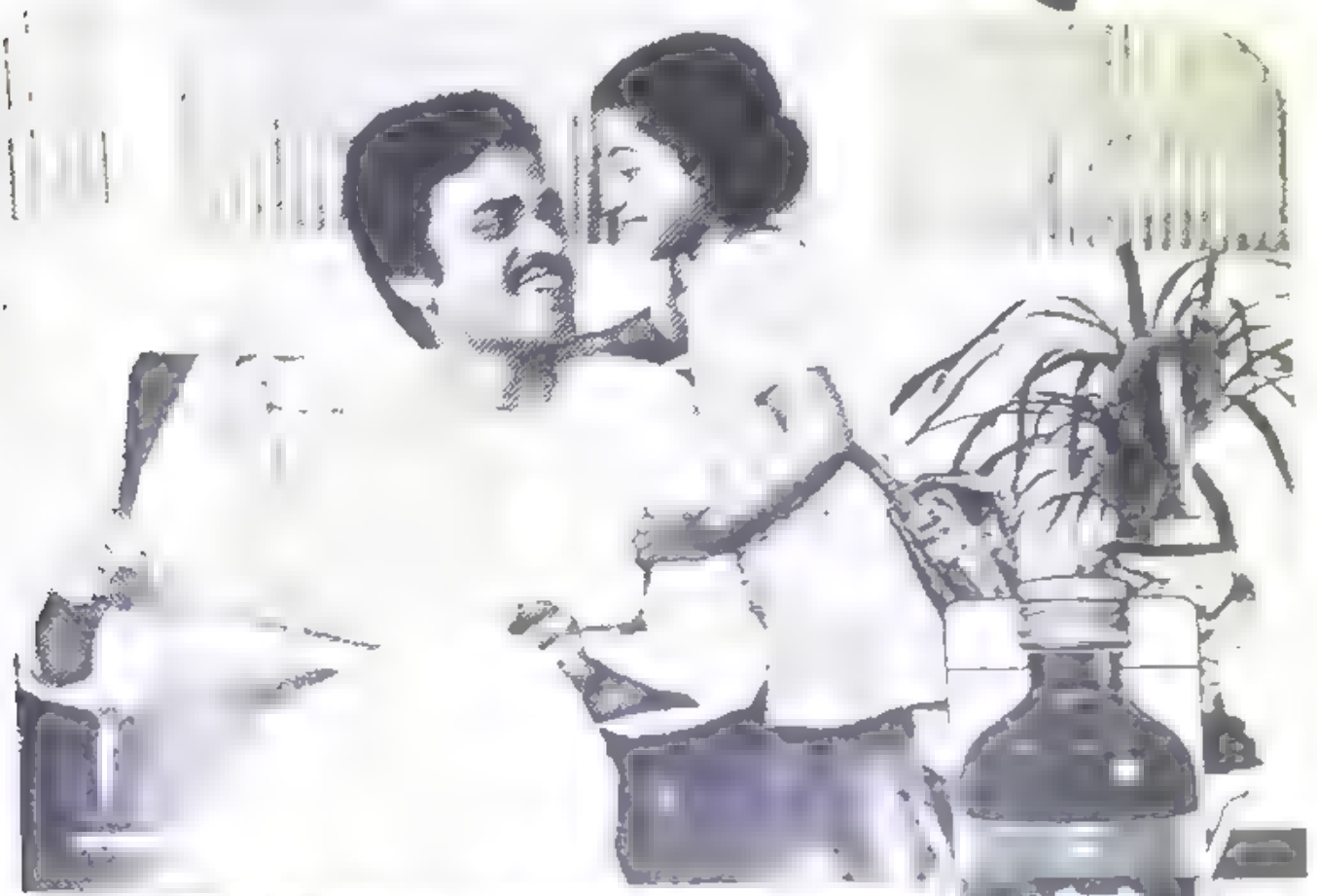

मि[illegible] का भी आपके ख़ून के साथ गहरा रिश्ता है

स्वस्थ ख़ून अच्छी सेहत का आधार है। और स्वस्थ ख़ून के लिये ज़रूरत है लौहतत्व की। मिनाडेक्स में लौहतत्व की प्रचुर मात्रा के कारण इसके हर चम्मच से आपके ख़ून को पूरा फ़ायदा मिलता है।

रक्तशक्तिदायक टॉनिक

मिनाडेक्स®

CASGM-...9 1203 HN

पुलपर बूढ़ा आदमी

● रूपान्तर : ब स.

एक मुख़्तसर-सी कहानी

● सहायक : जानकी प्रसाद शर्मा

हेमिंग्वे की रचनाएं की

'फार हूम द बेल टोल्स

उपन्यास का कथासार

किसके लिए...?

रॉ[illegible] पर स्थित अपने [illegible] के साथ लड़ों के किनारे एक बड़ी सिर नाक दिखाई दे रही थी.

क्या वह टिल्ड है? [illegible] उसने पूछा

हां अब रिलैक्स' कहने पुल पार और वे पुल पर पहुंच गए [illegible] कोई सवार एलेन्सा के ऊपर दिखा.

[illegible]

[illegible] अरबे एक बहरा सवार है और दूसरे ओर पुल'

'कमांडेन्टों की चेक-आउट करता है?'

यह चेक-आउट नहीं इसी किस्म के है, जो आप देख रहे हैं [illegible]

[illegible] एलेन्सा ने पूछा

[illegible] अब [illegible] पुल के [illegible]

तुम किसके आदमी हो?' उसने पूछा

[illegible] आप घोड़े पहाड़ियों में छोड़ी [illegible] है या [illegible] है'

ठीक है अब मैं पुल उड़ाने के सामान को [illegible] स्थान पर छिपाना चाहता हूं जो पुल के पास होना चाहिए

'इसके लिए पैदल ही सबसे ठीक रहेगा. एलेन्सा ने कहा [illegible] पुल से [illegible] दाएं पहाड़ की चढ़ाई चढ़ने [illegible] पगडंडी में तय हो गया [illegible] वह एलेन्सा घोड़ों को वहीं छोड़कर पैदलों का [illegible] और चलने लगा नदी के किनारे लेटे हुए घोड़ों का [illegible] को मुंह चिढ़ाते हुए

वह कुल चिंतित थी या वह अपने बारे में चिंतित नहीं थी वह युद्ध के लिए तैयार थी इस समय स्पेनी जनरल गाल्ज के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे चलने से पहले गाल्ज ने कहा था 'सबसे पुल उड़ाना है' जो तुम्हारे लिए मामूली काम है [illegible] यह है कि दुश्मन के हमले के वक्त को [illegible] पुल को नहीं वक्त पर उड़ाया जाय

"और वह सही वक्त कौन सा होगा?" आदत से [illegible] इसका हमला शुरू होने के फौरन बाद!" पाब्लो ने [illegible] को दिखाते हुए जवाब [illegible] ने कहा था [illegible] फाड़ और एक दफा [illegible] से हारकर भी सकते हैं मैं चाहता हूं कि हमारा हमला शुरू होने के बाद यह पुल दुश्मन की फौज के गुजरने लायक न रहे'

'बिना काम में कोई साम नहीं, बल्कि नुकसान होता है"

[illegible] एक दूसरे आदमी को और [illegible]

[illegible] प्राकृतिक पार्श्व के बाद [illegible] और देखते हुए पैदलों ने [illegible]

डाइनामाइट?—पुल उड़ाने के लिए

पुल उड़ाने के बाद हमें ये पहाड़ छोड़ देने पड़ेंगे और मैं [illegible] पैदलों ने कहा

[illegible] एलेन्सा ने [illegible] कहा "क्या तुमने [illegible] खत्म हो गया है अपने स्वार्थ के लिए तुमने [illegible] है सिर्फ इस पुल पर [illegible] के लिए पहाड़ियों की कमी नहीं है'

● 'हत्यारे' और 'किलीमंजारो की बर्फ' की नायिका अवा गार्डनर (हेमिंग्वे की गोद ली हुई बच्चियों की कुल संख्या का एक नगीना) 'हत्यारे' अकेली ऐसी फिल्म थी जिसे हेमिंग्वे क्यूबा में अक्सर अपने घर के प्रोजेक्टर पर देखा करते थे. यह अलग बात थी कि दूसरी रील चलते चलते सो जाया करते थे

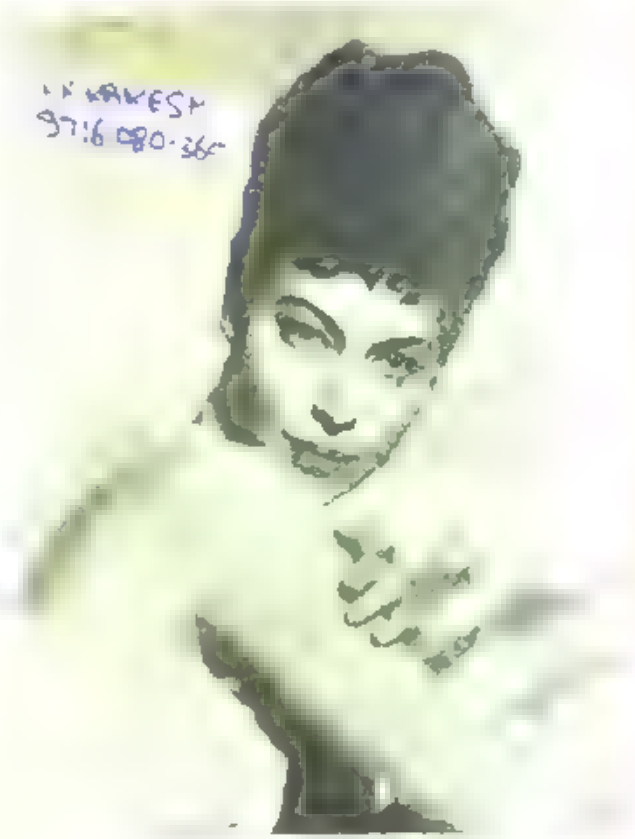

● 'फार हूम द बेल टोल्स' की सफलता को देखकर हालीवुड से उसको फिल्म के लिए 136000 डालर पेश किये गये. जब हेमिंग्वे ने पहले पहल इंग्रिड बर्गमान को देखा तो उसके कान हो गये, वह ममत्वी को ममत्वी उपन्यास की मार्ग्या का प्रतिरूप लगी हेमिंग्वे ने फिल्म के बाद कहना शुरू कर दिया कि वह तो मेरी गोद ली हुई बच्ची है

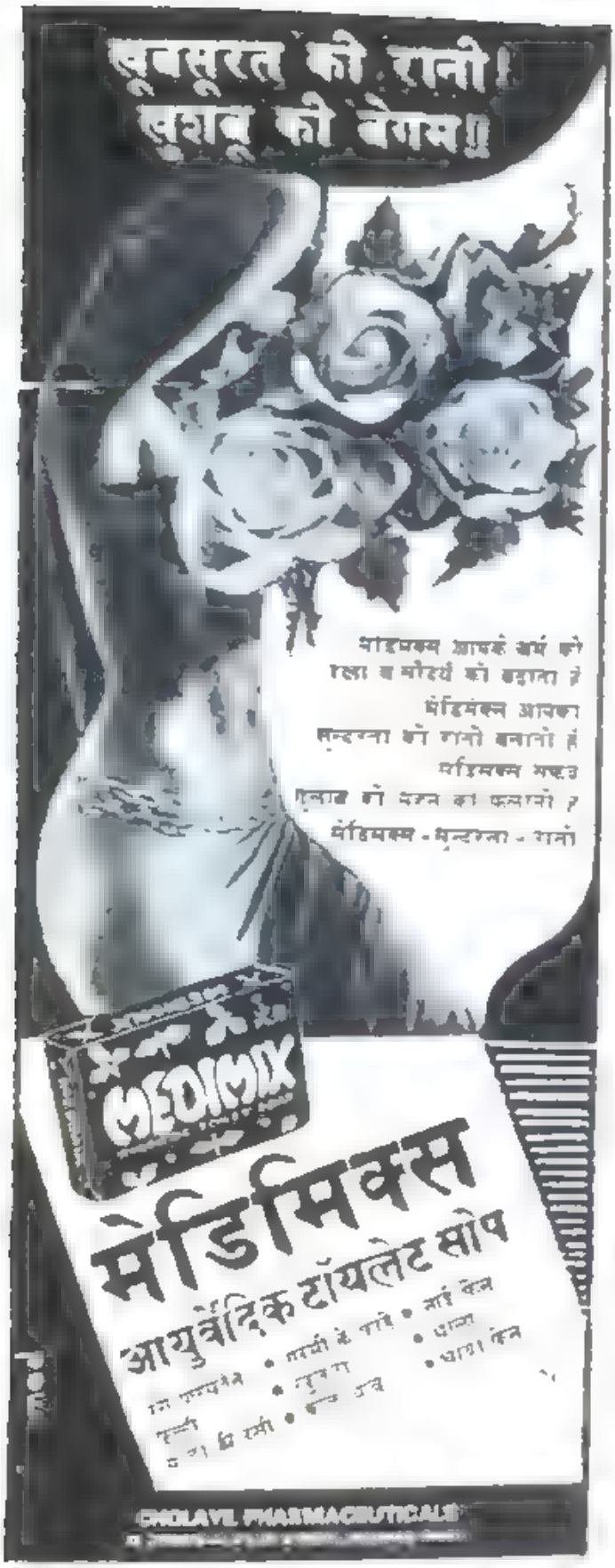

Published by

युद्ध के मैदान से

एनेस्ट हेमिंग्वे ने बटालियों के सोवियत विजयगान के आधार पर हेमिंग्वे युद्ध संवाददाता के रूप में स्पेनिश गृहयुद्ध पर लिखे दो हिमांशु हेमिंग्वे ने हेमिंग्वे में स्पेनिश गृहयुद्ध के दौरान विरोधियों का सामना लेकर कई सवाल खोल दिये—इस आश्चर्यजनक उद्देश्य से कि हेमिंग्वे कर हो गया अन्यथा अवाक हो उन्मुक्त रिपोर्टिंग करना हेमिंग्वे में साहित्य में नया मोड़ लाया था अब हम अन्यत्र के विरुद्ध अभिमत

'वजन का अपना प्रवक्ता हो'

जी हां, मैं हेमिंग्वे, मैड्रिड से बोल रहा हूं!

● पत्रकारिता में जब तक युद्ध संवाददाता नाम की चीज रहेगी, हेमिंग्वे का नाम उस इतिहास में जड़ा रहेगा। पेरिस-प्रवास में हेमिंग्वे ने एक मैनिक से ज्यादा बड़ी भूमिका निभायी थी। मैड्रिड के युद्ध का अनुभव उनके साथ था और 'फार हूम द बेल टाल्स' घूम मचा चुका था

मैं

'हमारे खयाल से नहा " उन्होंने कहा " हेमिंग्वे मिलना चाहता है उधर तुम्हारा पता आ कर यह

दिया जा रहा था जो कि अपनी बात बाहर कि

दो अपरिचित दल में घेराव रहा

मैं हेमिंग्वे, देखने आया हूं कि तुम लोग ठी

मैं बहुत प्रसन्न हूं' वह बोला 'आपको बताऊं मुझे

कि बाहर क्या हो रहा है

और मुझे मजबूत दर्द

[illegible]

[illegible]

"यह हुआ कैसे?" मैंने पूछा

"हम कुछ दुश्मनों से घिर गए थे और हम उन्हें फिर से इकट्ठा करने के लिए आगे बढ़े हमने कर भी लिया फिर फायरिंग के साथ हम आगे बढ़े तो सामने और हमने उन्हें हरा दिया कारों बंगे पहाड़ थी और वहीं किसी ने एक ग्रेनेड मुझ पर फेंक दिया"

इसका हाथ पकड़ कर यह सुनते हुए मुझे उसके एक शब्द [illegible] भी विश्वास नहीं आया उसकी जो कुछ भी आयु थी [illegible] किसी सिपाही के अवतार-सा नहीं लगता था मुझे यह तो पता नहीं था कि यह घायल कैसे हुआ, पर उसकी कहानी सही नहीं लगती थी यह विवरण कुछ इस प्रकार का हो था जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति घायल होना चाहता है लेकिन मैं चाहता था कि वह समझे कि मैं उसका विश्वास कर रहा हूँ

"तुम हो कहाँ के" मैंने पूछा

सिक्किम [illegible] बड़ा से विद्या [illegible]

"पहले आपका गाँव में पहले तुम क्या करते

मैं एक सामान्य [illegible] था

अब तो मुझे पूरा विश्वास हो गया कि उसकी कहानी सच नहीं हो सकती [illegible] मैं सोचने लगा कि वह किस प्रकार इतना गंभीर रूप से घायल [illegible] हो गया होगा क्या वह अपने युद्ध के दौरान [illegible] अपने घायल होने के बाद के

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हेमिंग्वे की महिलाएं

● हेमिंग्वे की मां,
जिस पर कभी नहीं थूक सके

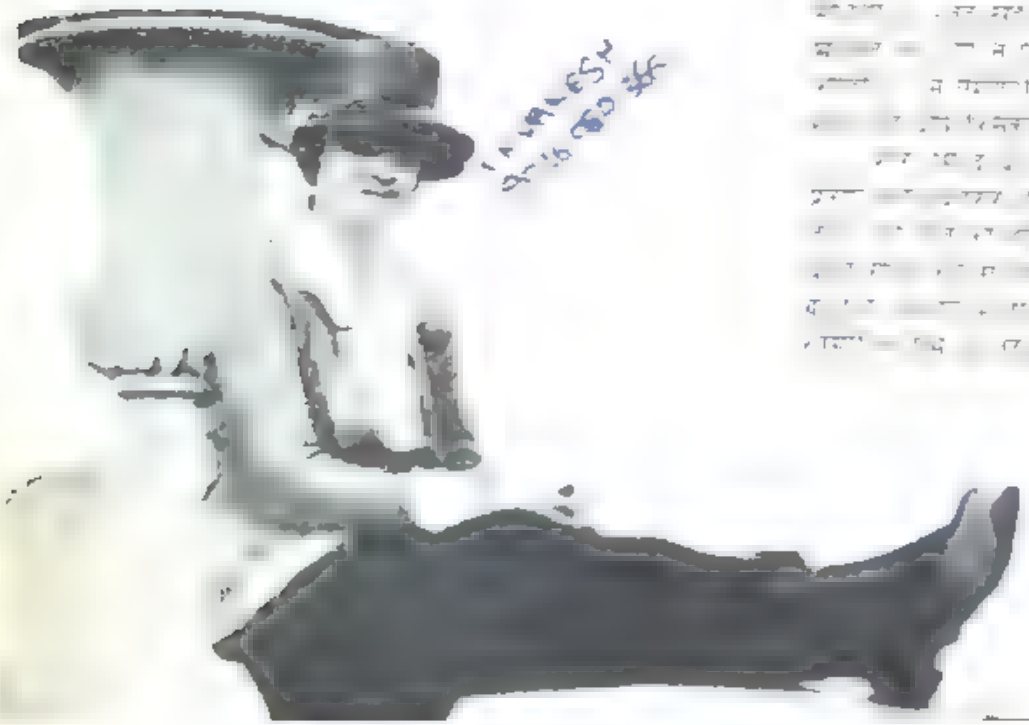

● हेमिंग्वे की तीसरी पत्नी मार्था गेल्हार्न, जिसको अपने बाद वह पत्नी कभी न ला सके

● अर्नेस्ट अपने परिवार (हेडली पत्नी) की अन्य पत्नियों के साथ [illegible]

अर्नेस्ट का अंतिम दिन और मैं

© मेरी वेल्श हेमिंग्वे

प[illegible]

[illegible]

[illegible]

अगला अंक

"हमारा हुक्म पहुँचे कहाँ" ...
"हमारा घर बनायेंगे" ...
"और जो कोई फिर आग लगा दे?" ...
"तो हम जो फिर बनायेंगे." ...
"और ... फिर आग लगा दे?" ...
"तो हम जो फिर बनायेंगे." ...
"और अगर कोई हजार बार आग लगा दे?" ...
"तो हम हजार बार बनायेंगे!" ...

विश्व के संवेदनशील रचनाकारों की आस्था को समर्पित इस विशेषांक में पढ़िए—

- **साक्षात्कार के अंतर्गत**
  प्रख्यात कथाकार एवं प्रेमचंद के यशस्वी पुत्र अमृतराय से कन्हैयालाल नंदन की बातचीत
- **आज प्रेमचंद की जरूरत क्या है?**
  प्रेमचंद की प्रासंगिकता पर अपने राय का लेख.
- **वहीं पहुंचती है यारो, कहीं भी बात चले!**
  प्रेमचंद के कथा संसार पर वरिष्ठ साहित्यकारों का संश्लिष्ट लेख
- **प्रेमचंद और हमारा बौनापन!**
  प्रेमचंद के बाद किसका नाम लें ... या प्रेमचंद को मूल्यां - गोविंद मिश्र का महत्त्वपूर्ण आलेख
- **प्रेमचंद भूखे नहीं मरे, भूख के खिलाफ लड़े.**
  विद्वान विभिन्न प्रेमचंद के बारे में क्या सोचते हैं? शरच्चंद्र और प्रेमचंद ... के संबंध पर डा. प्रेमाकर माचवे की आत्मीयतापूर्ण टिप्पणी
- **अगर आज प्रेमचंद जीवित होते तो?**
  आज की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों को लेकर यह कथा मार्मिक कथन'—रवींद्रनाथ त्यागी का व्यंग्य और कुछ ...

जिसके साहित्य ने बेजुबानों को जुबान दी, उस अमर कथाकार की जन्म शताब्दी के अवसर पर अपने पाठकों के लिए विशेष भेंट

प्रेमचंद विशेषांक

साहित्यिक हलकों से निकले कई पत्रिकाओं के विशेषांकों से भिन्न, सहज और आत्मीय तथा पाठकों, छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिए एक अनिवार्य दस्तावेज

- उपन्यास सम्राट का लिखाया थाना—गोदान
  गोदान का [illegible]—डा. रामबरन सिंह

'हंस' के संपादक पद से इस्तीफा

हंस के प्रकाशन का दायित्व और संपादक के रूप में प्रेमचंद का व्यक्तित्व—डा. कमल किशोर गोयनका

- **एक निहायत मामूली आदमी की गैरमामूली उपलब्धियों का नाम है—प्रेमचंद**
  आलोचना सम्राट शायर फिराक गोरखपुरी के उद्गार जिन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं श्री उमाकांत मालवीय
- **प्रेमचंद की हिजरत**
  प्रेमचंद का पहला लेखक [illegible] में इस इतिहास की कथा का बखान प्रस्तुत कर रहे हैं—काजी अब्दुल वली।
- **प्रेमचंद की सफल कथाओं पर असफल फिल्में**
  गोदान, गबन, दो बैलों की कहानी हीरालाल के सितारे आदि सशक्त कहानियों पर बनी फिल्में फ्लॉप क्यों गयीं?—नेत्रसिंह रावत
- **प्रेमचंद के बारे में फिल्मी सितारे**
  प्रसिद्ध सीनेता [illegible] के प्रेमचंद [illegible]
- **प्रेमचंद पाठ्यक्रम में**
  प्रेमचंद का साहित्य विद्यार्थियों को क्यों पढ़ाया जाता है और कैसे पढ़ाया जाना चाहिए? [illegible] के विचार स्वागत
- [illegible]
- [illegible] टिप्पणी सहित प्रस्तुत [illegible]
- प्रेमचंद अनुवाद हिंदी में क्यों [illegible]
- प्रेमचंद के नाटक 'कर्बला' का कथोपकथन और आपा परिवर्तन की दास्तान—श्रवण रायण [illegible]
- **हम कहे गाव की गाथा**
  गोदान का हल्ली गाव बनाने का ही निर्माता नहीं बल्कि भारत के किसी भी गाव का हो सकता है नव और अब के गाथा की कथात्मक तुलना कर रहे हैं—शिवसागर मिश्र

- प्रेमचंद का एकमात्र [illegible]—झामुरी

अल्प आकलन

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- प्रेमचंद का एक अप्राप्य [illegible]—किशोर
- प्रेमचंद का प्रथम [illegible]—अमरनाथ अग्रवाल
- प्रेमचंद का बनाया [illegible]—[illegible] में बनी मार्धा [illegible]

प्रेमचंद की अल्प प्रचारित बहुरंगी कहानियां, दुर्लभ चित्र, और जीवन की ऐतिहासिक घटनाएं

सारिका

१६ जुलाई, ८० : अंक - [illegible]

अपना प्रति
[illegible]

सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद.

सुपर रिन — [illegible]

सैन्डक
एक इन्द्रधनुषी
बहार
भरपूर आराम और सुरक्षा
के लिए हमेशा बाटा के
सैन्डक जूते ही पहनिए
Bata

याद रखिए

माँ का दूध सब से तुलना है

अमूलस्प्रे विकास का शुभारंभ करता है और बालअमूल उसे परिपूर्ण करता है

तीसरे महीने से

बाल अमूल भी दीजिए

अत्यन्त पौष्टिक, दूध मिश्रित अन्नाहार

बाल अमूल - हमारे देश के बच्चों के लिए एक विशेष वरदान

बाल अमूल - ज्यादा पोषण मूल्य

- दूध ज्यादा प्रमाणों और ठोस प्रमाणों में आता है जो
- [illegible]
- [illegible] विटामिन की मात्रा
- पानी में दूध के मुकाबले [illegible] सुपाच्य और स्वादिष्ट
- दूध अतिरिक्त- जैसे ही दूध [illegible] पानी और मिलाकर

बाल अमूल से आपके पैसे को दुगुनी मूल्य प्राप्ति होती है।

सुझाव आवश्यकतानुसार पानी, चीनी या ग्लूकोज मिलाकर पुनर्गठन और खोई हुई आर्द्रता [illegible] के लिए इस डब्बे पर दिखाए, चार्ट देखें। [illegible] अमूल दूध पाउडर - बाल अमूल और एक अच्छे से डब्बा देखिए।

बिक्री - व्यवस्था
गुजरात को - ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, आणंद।

जीवन की छोटी-छोटी
खुशियों के लिए
बचत कैसे की
जाये.

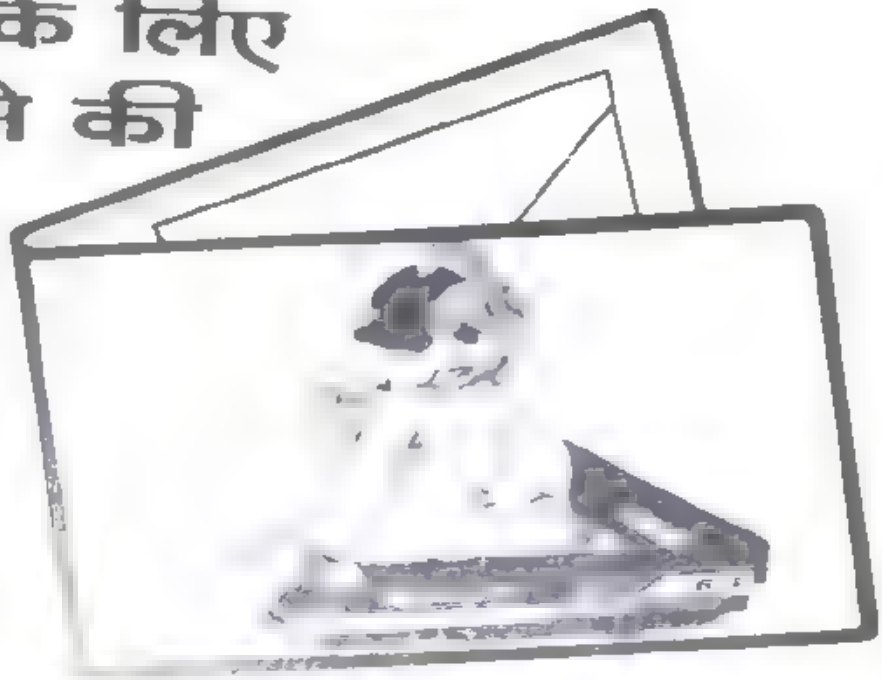

निरन्तर
जमा खाता

केनरा
बैंक

विद्यानिधि और बालधन

बिना टिकट यात्रा करना बहुत बड़ी सामाजिक बुराई है। इससे राष्ट्रीय आय को बहुत भारी हानि होती है।

बिना टिकट यात्री वास्तविक यात्री के सुख को बड़ी मात्रा में कम करता है। वह वास्तविक यात्रियों के उचित अधिकारों को छीनता है और भीड़ को बढ़ाता है।

बिना टिकट यात्रा करना लाचारी नहीं बल्कि लोगों की आदत बन गई है। यह एक फैलने वाली गम्भीर सामाजिक बुराई है। यह सभ्य नागरिकों पर दूषित प्रभाव डालती है।

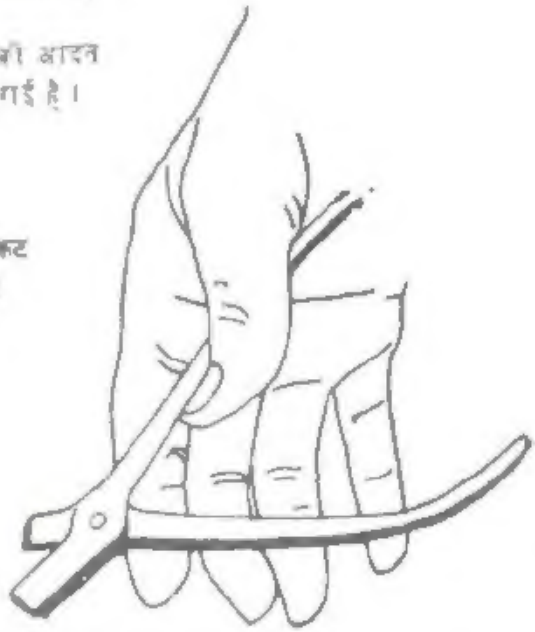

अपने अधिकारों और सुखों की रक्षा करें। बिना टिकट यात्रियों का सामना करें और अपराधियों को पकड़ने में हमारी सहायता करें।

याद रखें कि बिना टिकट यात्रा करना भारतीय रेल अधिनियम की धारा 112 के अधीन गम्भीर अपराध है।

अच्छे नागरिक बनें—राष्ट्रीय आय को बचत करें—बिना टिकट कभी भी यात्रा न करें।

बिना टिकट यात्रा
एक सामाजिक बुराई है

गाड़ी में
चढ़ने से
पहले
अपना
टिकट खरीदें

उत्तर रेलवे

मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी द्वारा प्रकाशित

सबसे कम क़ीमत में
सबसे ज़्यादा सफ़ाई

दूसरी सब डिटर्जेण्ट बार से कहीं
ज़्यादा अच्छी, कहीं ज़्यादा किफ़ायती और
साबुनों से १½ गुना ज़्यादा शक्तिशाली!

नीली स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट धुलाई की बार
एक बार स्वस्तिक बार फिर हमेशा स्वस्तिक बार

दीवारों को इमल्शन की शोभा देना है जितनी बड़ी बात... दीवारों को सुन्दर बनाए रखना भी उतनी ही बड़ी बात.

आइए, नेरोलॅक पेण्ट्स की मदद से अच्छा इमल्शन पहचानें.

आपके पैसे का सर्वोत्तम मूल्य दिलाने वाले पेण्ट के बारे में आप इससे ज्यादा कह भी क्या सकते हैं!

लेकिन इसमें भी कहीं ज्यादा!

इसलिए, मेहनत से कमाए हुए पैसे से इमल्शन पेण्ट पर खर्च करने से पहले इन कुछ बातों पर विचार कर लें. इससे आपके पैसे का सर्वोत्तम मूल्य मिलेगा.

1. एक अच्छा इमल्शन पेण्ट, जैसे **सिलिकोन के साथ नेरोलॅक एक्सिलिक इमल्शन** से रंगाने में मुलायम फिनिश मिलती है.

2. ज्यादा टिकाऊ होने के कारण, दीवारों को सजाने वाला इससे बेहतर पेण्ट नहीं.

3. बस, इसका निखार बनाए रखने के लिए, बीच बीच में नरम गीले कपड़े से पोंछते रहिए.

4. सिलिकोन, जो इसका विशेष तत्व है, ज्यादा धूल पोंछा जा सकता है और रंगों का निखार लम्बाई तक बना रहने में मदद करता है.

शुरू शुरू में होने वाले खर्च से घबराइए नहीं. विश्वास कीजिए, सिलिकोन वाला नेरोलॅक एक्सिलिक इमल्शन आखिर में कम खर्चीला ही पड़ता है. जानना चाहते हैं, क्यों और कैसे? हमारी नेरोलॅक पेण्ट्स कुंजिका 'सही पेण्ट के लिए चुने और करें' की नकल प्राप्ति के लिए लिखिए. नीचे दिए कूपन को भरकर फौरन डाक में भेज दीजिए।

नेरोलॅक पेण्ट्स

नेरोलॅक लगाइए। रंग में आइए॥

नाम:

पता:

पिन कोड:

एशियन पेण्ट्स (इंडिया) लिमिटेड,

दीवारों को इमल्शन की शोभा देना है जितनी बड़ी बात... दीवारों को सुन्दर बनाए रखना भी उतनी ही बड़ी बात.

आइए, नेरोलॅक पेण्ट्स की मदद से अच्छा इमल्शन पहचानें.

आपके पैसे का सर्वोत्तम मूल्य चुकाने वाले पेण्ट के बारे में आप इससे ज्यादा कह भी क्या सकते हैं!

अधिक इससे भी सही ज्यादा!

इसलिए, मेहनत से कमाए हुए पैसे को इमल्शन पेण्ट पर खर्च करने से पहले इन कुछ बातों पर विचार कर लें. इससे आपके पैसे का सर्वोत्तम मूल्य मिलेगा.

1. एक अच्छा इमल्शन पेण्ट, जैसे सिलिकोन के साथ नेरोलॅक पेंक्रिलिक इमल्शन में रेशम सी मुलायम फिनिश मिलती है.

2. ज्यादा टिकाऊ होने के कारण, दीवारों को सजाने वाला इससे बेहतर पेण्ट नहीं.

3. बस, इसका निखार बनाए रखने के लिए, बीच बीच में नरम गीले कपड़े से पोंछते रहिए.

4. सिलिकोन, जो इसका विशेष तत्व है, ज्यादा बार पोंछा जा सकता है और रंगों का निखार बनाए रखता है. इसलिए दागों तक रंग फीके नहीं पड़ते.

शुरू - शुरू में होने वाले खर्च से घबराइए नहीं. विश्वास रखिए, सिलिकोन वाला नेरोलॅक पेंक्रिलिक इमल्शन आखिर में बड़ा सस्ता ही पड़ता है. जानना चाहते हैं, क्यों और कैसे? हमारी नेरोलॅक पेण्ट्स पुस्तिका **'सही पेण्ट कैसे चुने और करें'** की मुफ्त प्रति के लिए लिखिए. नीचे दिए कूपन को भरकर फौरन डाक में भेज दीजिए।

नेरोलॅक पेण्ट्स

नेरोलॅक लगाइए। रंग में आइए॥

हमारे ऐसे नेरोलॅक पेण्ट्स पुस्तिका की एक मिनी भेज दीजिए.

नाम: _____

पता: _____

_____ पिन कोड: _____

पुरवांक नेरोलॅक पेण्ट्स लिमिटेड,
पेंट्स डिवीजन, पी. बी. नंबर 16332, बम्बई 400 013.